खंड 4
अभ्यास में व्यावहारिक ज्ञान का उपयोग

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 11 उपकरण और तकनीक*

इकाई की रूपरेखा

11.0 परिचय

11.1 परंपरागत तकनीकें

11.2 नवीन तकनीकें

11.3 प्रभावशाली उपयोग के साधन

11.4 सारांश

11.5 संदर्भ

11.6 आपकी प्रगति की जाँच के लिए उत्तर

अधिगम के परिणाम

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी सक्षम होंगे:

- अनुप्रयुक्त (व्यावहारिक) मानवविज्ञानियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले विभिन्न उपकरण और तकनीकों को परिभाषित करने में;
- विभिन्न व्यवस्थाओं में विशिष्ट उपकरण और तकनीकके उपयोग की पहचान करने में; तथा
- अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान की अपनी शोध परियोजना में इन तकनीकों का प्रयोग कर सकेंगे।

11.0 परिचय

जैसा कि अब आप समझते हैं कि अनुप्रयुक्त (व्यावहारिक) मानवविज्ञान परंपरागत मानव विज्ञान से इस अर्थ में भिन्न है, कि बाद वाला मानवशास्त्रीय ज्ञान का उपयोग उन समसामयिक मुद्दों का समाधान करने के लिए करता है जिनका सामना विश्वभर में विभिन्न समुदायों एवं संस्थाओं द्वारा किया जाता है।अनुप्रयुक्त मानवविज्ञानी लुप्तप्राय समूहों के अस्तित्व को सुनिश्चित करने के लिए सामूहिक रूप से इन मुख्य मुद्दों को संबोधित करने और लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों का उपयोग करते हैं। वास्तविक–वैश्विक समस्याओं को संबोधित करने के लिए, व्यावहारिक मानव विज्ञानी जानकारी हासिल करने के लिए किसी समूह अथवा किसी संस्था का अध्ययन करते समय विभिन्न उपकरण और तकनीकों को अपनाते हैं, तथा उसे योजनाओं एवं नीतियों का निर्माण करने में उपयोग करते हैं, जिन पर बाद में अमल किया जाता है। इस इकाई में, हम व्यावसायिक अभ्यास में उपयोग होने वाले इन उपकरण और तकनीकों को समझने का प्रयास एक ऐसा किट तैयार करने से है जो किसी वांछित व्यावहारिक मानव वैज्ञानिक शोधकार्य में सटीक बैठे। हम पहले इस क्षेत्र में मानव वैज्ञानिकों द्वारा अपनाई गयी परंपरागत विधियों को देखेंगे तथा उसके पश्चात परिवर्तनात्मक विधियों में विस्तार के साथ जाएंगे। वह उपकरण और तकनीक जिनके बारे में चर्चा इस इकाई में की गयी है, उनका संबंध इस विषय के विभिन्न उप–विषयों

* उबैद अहमद डार,शोधार्थी,मानवविज्ञान संकाय, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

के साथ भी है तथा उनका उपयोग तदनुसार किया जा सकता है। अंततः, हम कुछ आवश्यक बातों को जानेंगे जिनके बारे में किसी व्यावहारिक मानव विज्ञानी को जानने की आवश्यकता होती है।

11.1 परंपरागत तकनीकें

व्यावहारिक मानव विज्ञानियों द्वारा उपयोग की जाने वाली सर्वाधिक परंपरागत मानव वैज्ञानिक तकनीकों में से एक है, नृजातीय अध्ययन। जहां एक मानव विज्ञानी मुद्दों की एक व्यापक सरणी पर आधारित जानकारी एकत्रित करने के लिए प्रत्यक्ष रूप से उस संस्कृति में सहभागी बन जाता है जिसका वह अध्ययन कर रहा होता है। एक व्यावहारिक शोधकर्ता के रूप में, मानव विज्ञानियों को आंकड़े एकत्रित करने तथा विश्लेषण करने के लिए उचित प्रशिक्षण दिया जाता है चूंकि, ज्ञान का उपयोग करने के लिए उचित दस्तावेजीकरण, विवेचना, तथा अतिरिक्त आंकड़े स्रोतों का उपयोग करने की आवश्यकता होती है(केडिया एवं बेनेट, 2005)। जानकारी प्रत्यक्ष अवलोकन, साक्षात्कार, स्थानीय भाषा सीखकर, दृश्य–श्रव्य मीडिया के माध्यम से आंकड़ों को रिकॉर्ड करने जैसी तकनीकों का उपयोग करके प्राप्त की जा सकती है जिसकी तत्पश्चात विवेचना की जाती है तथा विभिन्न साधनों जैसे एसपीएसएस(स्टेटिस्टिकल पैकेज फॉर द सोशल साइन्सेज़ का संक्षेपण– सामाजिक वैज्ञानिकों द्वारा आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण करने के लिए उपयोग किया जाता है) इत्यादि द्वारा विश्लेषण किया जाता है। खोजी जा रही जानकारी के आधार पर, योजनाओं एवं नीतियों का निर्माण किया जाता है, जिनका निष्पादन अंततः अपेक्षित कार्रवाही के रूप में किया जाता है। परंपरागत साधनों एवं तकनीकों के अतिरिक्त, वह मानव विज्ञानी जो व्यावहारिक क्षेत्र में कार्यरत हैं, गुणात्मक के साथ साथ संख्यात्मक आंकड़ों को एकत्रित करने के लिए विविध परिवर्तनात्मक तकनीकों का उपयोग भी करते हैं तथा उनमें से कुछ पर निम्नलिखित भागों में चर्चा की गयी है।

अपनी प्रगति जांचें

1. अनुप्रयुक्त मानवशास्त्रीय अनुसंधान पारंपरिक मानवविज्ञान से किस प्रकार भिन्न है?

   ....

   ....

   ....

   ....

   ....

2. क्या अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान अनुसंधान में पारंपरिक तकनीकों का उपयोग करना संभव है? कैसे?

   ....

   ....

   ....

   ....

11.2 नवीन तकनीकें

समय के साथ,विधि आधारित साधन विभिन्न प्रकार की परियोजनाओं एवं कार्यक्रमों में कार्यरत संस्थाओं अथवा व्यक्तियों द्वारा बढ़ती मांग को संतुष्ट करने के लिए अधिक परिष्कृत हुए हैं तथा समय–कुशल हुए हैं। चूंकि सहभागी अवलोकन जैसी मानव वैज्ञानिक तकनीकें व्यापक एवं समय लेने वाली तकनीकें हैं, व्यावहारिक मानव विज्ञानी उन साधनों एवं तकनीकों को लेकर आए हैं जो सम्पूर्ण सटीकता के साथ कम समयावधि में स्पष्ट परिणाम उपलब्ध करवा सकती हैं। कौन किस शोधकार्य में रूचि रखता है, इसके आधार पर इन तकनीकों में भिन्नता हो सकती हैं, अथवा परस्पर–व्याप्त हो सकती हैं। कुछ साधन एवं तकनीकें जिनका उपयोग गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनों शोधकार्यों में उपयोग किया जाता है, यहाँ संक्षेप में उन पर चर्चा की गयी है:

11.2.1 तीव्र मूल्यांकन प्रक्रिया (RAP)

मानव विज्ञान में आंकड़े एकत्रित करने का एक महत्त्वपूर्ण साधन है जिसका उपयोग उन परियोजनाओं में किया जाता है जहां समयसीमाएं पूर्व निर्धारित होती हैं। उदाहरण के लिए, समस्या को संभावित समाधान प्रदान करने के लिए स्वास्थ्य कार्यक्रमों में आंकड़ों को तीव्रता के साथ एकत्रित किए जाने की आवश्यकता होती है, तथा इस उद्देश्य के लिए, इस तकनीक का उपयोग किया जाता है। तीव्र मूल्यांकन प्रक्रिया स्थानीय स्थितियों एवं आवश्यकताओं, जानकारी, परिप्रेक्ष्य तथा प्रथाओं के प्रत्यक्ष तीव्र व्यक्ति–निष्ठ मूल्यांकनों के लिए एक कार्यकुशल तकनीक उपलब्ध करवाती है (यूसीएलए, 1987)। अधिकतर तीव्र मूल्यांकन प्रक्रिया लघु–समयावधि व्यावहारिक परियोजनाओं की आवश्यकताओं के प्रति पसंद के अनुसार निर्मित नृजातीय प्रक्रियाओं पर निर्भर रहती हैं। उपयोग की जाने वाली विशिष्ट तकनीकें औपचारिक तथा अनौपचारिक साक्षात्कारों, चर्चाओं, सहभागी अवलोकन, बहु–अदिष्ट शोधकार्य, सोशल नेटवर्क विश्लेषणों, सहभागी क्रियात्मक शोधकार्य (PAR) तथा फोकस समूहों से मिलकर बनती हैं (केडिया एवं बेनेट, 2005)। योजना अथवा समीक्षा का तीव्र एवं प्रभावशाली मूल्यांकन करने के लिए,तीव्र मूल्यांकन प्रक्रिया का भी अन्य रणनीतियों के साथ मिलकर उपयोग किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त,इसका उपयोग किसी उद्यम चक्र के विभिन्न चरणों की परियोजना के प्रबंधन में एक परस्पर क्रिया तथा मूल्यांकनों के समापन के रूप में किया जा सकता है। इसलिए तीव्र मूल्यांकन प्रक्रिया काफी लचीली है, जो एक साधन के रूप में, विभिन्न क्षेत्रों, परिस्थितियों तथा आबादियों के लिए उपयुक्त हो सकती है।

11.2.2 फोकस सामूहिक चर्चा (FGD)

फोकस सामूहिक चर्चा (FGD) अथवा फोकस सामूहिक साक्षात्कार करना तीव्र मूल्यांकन प्रक्रियाओं के लिए सर्वाधिक व्यापकता के साथ उपयोग की जाने वाली तकनीकों में से एक है। काफी लंबे समय से, व्यावहारिक मानव विज्ञानी इस तकनीक का उपयोग किसी विशेष समुदाय में विभिन्न मुद्दों पर जानकारी एकत्रित करने के लिए करते रहे हैं। उदाहरण के लिए,मार्केटिंग विशेषज्ञों ने इस तकनीक को किसी आबादी की आवश्यकताओं, पसंदों तथा नापसंदों की पहचान करते हुए, इस संभावना को बढ़ाने के लिए उपयोग किया है कि ग्राहक कुछ निश्चित वस्तुओं को अन्य वस्तुओं की तुलना में अधिक खरीदेंगे। उत्तरोत्तर,सामाजिक शोधकर्ता फोकस सामूहिक तकनीक का

उपयोग कर रहे हैं, जैसा कि समाजशास्त्रियों, विश्लेषकों, तथा मानव विज्ञानियों द्वारा इस विधि का उपयोग करते हुए बढ़ती संख्या में लिखे जा रहे व्यावहारिक विद्वत्तापूर्ण लेखों से सिद्ध होता है(केडिया एवं बेनेट, 2005)।

इस तकनीक में, किसी समुदाय विशेष से लगभग 8–12 सहभागियों का चयन दिये गए विषय के बारे में व्यवस्थापरक विचार तथा संभावनाओं को जानने के लिए एक लक्षित समूह के रूप में एक सामूहिक चर्चा/साक्षात्कार के लिए किया जाता है। सामान्यतः, उन सहभागियों का चयन होता है जो समान मुद्दे से प्रभावित होते हैं अथवा वह जो दिये गए शोध विषय के बारे में सामूहिक अनुभव अथवा जानकारी साझा करते हैं। इस समूह में एक मध्यस्थता करने वाला व्यक्ति होता है जो अन्य प्रासंगिक मुद्दों के बारे में व्यापकतापूर्ण चर्चा करने की संभावना प्रदान करते हुए चर्चा के लिए दिये गए विषय को दिशा देने का काम करता है। इस चर्चा का मुख्य उद्देश्य एक परिवेश का निर्माण करना होता है जो प्रत्येक सदस्य को अपने उत्तर एवं विचारों को रखने की स्वतन्त्रता का बोध प्रदान करता है। समान पृष्ठभूमि वाले विभिन्न मतों की यह पारिस्थितिकी किसी समुदाय विशेष के सामने आए मूल मुद्दों की पहचान करने में सहायता करती है तथा इस प्रकार यह श्रेष्ठतर समाधान प्रदान करती है।

चित्र 1:फोकस सामूहिक चर्चाके प्रमुख चरण

अन्य सभी शोध विधियों के समान,फोकस सामूहिक चर्चा में भी पर्याप्त मात्र में कौशल, प्रतिद्वंद्वता एवं विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है। एक व्यावहारिक मानव विज्ञानी के रूप में,आपको लचीला एवं निष्पक्ष होने की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त, हमें उस समस्या अथवा विषय से संबधित सभी सैद्धांतिक एवं संकल्पनात्मक अवधारणाओं का ठोस ज्ञान होना चाहिए जिसके बारे में अध्ययन किया जाना है। फोकस सामूहिक चर्चा एक ढांचागत बातचीत है तथा सभी विचारों एवं मतों को समझने के लिए, हमें स्थानीय भाषा में कुशलता होना चाहिए। किसी अनुवादक अथवा दुभाषिए कि सहायता से FGD का संचालन करना संभव नहीं है। सामूहिक चर्चाओं का संचालन करने का कुछ अग्रिम प्रशिक्षण एवं अनुभव इस विधि के लिए अनिवार्य है, चूंकि इसके बिना हम बातचीत को उन मुद्दों की ओर ले जाएंगे जहां भविष्य में शोधकर्ताओं के लिए मात्र समस्याएँ ही खड़ी होंगी।

11.2.3 तीव्र ग्रामीण मूल्यांकन (Rapid Rural Appraisal)

तीव्र ग्रामीण मूल्यांकन एक तकनीक है जिसका उपयोग व्यावहारिक मानव विज्ञानियों द्वारा ग्रामीण व्यवस्थाओं पर आधारित शोधकार्य में किया जाता है। यह तकनीक विशिष्ट मुद्दे एवं जो उनका समाधान होना चाहिए, उनकी समीक्षाओं के तीव्र मूल्यांकन के लिए उपयोगी है। जैसा कि नाम द्वारा इंगित है,तीव्र ग्रामीण मूल्यांकन(RRA)में शोधकर्ताओं का एक दल शीघ्र–अतिशीघ्र नतीजों को प्राप्त करने की चेष्टा रखता है तथा उसके लिए, वह गाँव वालों के साथ मिलकर भी काम करने को ध्यान में रखते हैं। क्यों? क्योंकि स्थानीय लोग उन समस्याओं के बारे में अधिक जागरूक हैं जिनका सामना उन्हे करना पड़ता है तथा उन्हे यदि कुछ वैज्ञानिक ज्ञान दे दिया जाए तो वह

अधिक बेहतर समाधान प्रदान कर सकते हैं। तीव्र ग्रामीण मूल्यांकन तकनीक का नतीजा एक रिपोर्ट के रूप में होता है जिसका उपयोग विभिन्न तरीकों से किया जा सकता है जैसे कि परयोजना तैयार करने में,किसी चलती हुई परियोजना के संवर्धन में, राष्ट्रीय नीतियों इत्यादि की समीक्षा में(दास, 2012)।तीव्र ग्रामीण मूल्यांकन का उपयोग उन परिस्थितियों में किया जाता है जिनमें लोगों के त्वरित मूल्यांकन की आवश्यकता होती है जैसे बाढ़, भूकंप, महामारियाँ इत्यादि। इसलिए,तीव्र ग्रामीण समीक्षा को लोगों की बेहतरी के लिए एक तीव्र गतिविधि के रूप में पहचान मिलती है।

तीव्र ग्रामीण मूल्यांकन तकनीक के लाभ

1. तीव्र ग्रामीण मूल्यांकन समस्या एवं इसके समाधान की तीव्रता से पहचान करने में सहायता प्रदान करती है।
2. यह प्रकृतिक आपदाओं पर आधारित शोधकार्य की स्थिति में अधिक लाभकारी है।
3. तीव्र ग्रामीण मूल्यांकन उत्तर–आपदा अध्ययनों जैसे राहत वितरण इत्यादि में सहायक होती है।

तीव्र ग्रामीण मूल्यांकन तकनीक की हानियाँ

1) इस तकनीक में पूर्वाग्रह होने की अधिक संभावनाएं होती हैं चूंकि यह प्रभावित लोगों के साथ जुड़ी हुई है।
2) कभी कभी उन लोगों का अध्ययन कर पाना अत्यंत कठिन हो जाता है जो किसी आपदा के कारण गंभीर रूप से प्रभावित हैं।
3) स्थानीय लोगों की अधिक मात्रा में संलिप्तता के कारण, अपेक्षाएँ भी उतनी ही अधिक मात्र में होती हैं जिसके कारण समस्याएँ उत्पन्न होती हैं जब वह अपेक्षाएँ पूरी नहीं हो पाती हैं तब।

11.2.4 सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन (Participatory Rural Appraisal)

सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन(पीआरए)अनुसंधान तकनीक 1980 के दशक में विकसित हुई और ग्रामीण क्षेत्रों में किए गए सहभागी अनुसंधान का परिणाम है। मानवशास्त्रीय पद्धति ने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद एक विशाल बदलाव देखा है और यह बदलाव इसके व्यवहारिक पहलुओं में भी देखा गया था। हालांकि 1970 के दशक के मध्य में, पीआरए की आवश्यकता मानवविज्ञानी के बीच स्पष्ट रूप से महसूस की गई थी, जब मानवशास्त्रीय समझ को दलित, गरीब और उत्पीड़ित लोगों के उत्थान के लिए क्रियान्वित किया गया। इसने अंततः एक ऐसी पद्धति की नींव रखी, जिसका उपयोग शोधकर्ताओं और शोधार्थियों दोनों की सक्रिय भागीदारी के साथ समुदायों की बेहतरी के लिए किया जाना था, अर्थात, सहभागी अनुसंधान मूल्यांकन तकनीक के द्वारा। (पांडे, 2018)

प्रारम्भ में,सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन को सहभागिता शोध मूल्यांकन का नाम दिया गया, परंतु गाँवों एवं ग्रामीण क्षेत्रों में इसकी निरंतर उपयोगिता के कारण, यह तकनीक बाद में सहभागिता ग्रामीण मूल्यांकन के रूप में जानी गयी। सहभागिता ग्रामीण मूल्यांकन में, शोधकर्ता एवं स्थानीय लोग स्थानीय लोगों की क्षमताओं का उपयोग करते हुए एक साथ मिलकर समस्याओं की पहचान करने के लिए काम करते

हैं। शोधकर्ता की भूमिका सहभागिता ग्रामीण मूल्यांकन प्रक्रिया में स्थानीय समुदायों के सशक्तिकरण एवं क्षमता विकसित करने के आदर्श उद्देश्य को लक्षित करते हुए मात्र एक समन्वयक की होती है। तीव्र ग्रामीण मूल्यांकन से भिन्न, सहभागिता ग्रामीण मूल्यांकन एक लंबी प्रक्रिया है जो कि काफी लंबे समय तक चलती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रक्रिया में सम्मिलित समुदाय अपनी रूचियों को संबोधित करने के लिए, संभावित परिणामों का आंकलन करने के लिए तथा तदनुसार अपने लाभ के लिए प्रयासों को दिशा देने के लिए अपनी दक्षता को एकत्रित करते हैं। अतः इस प्रकार, पीआरए गाँव के लोगों को अपने जीवन तथा परिस्थितियों की वास्तविकताओं का संज्ञान लेने, सुधार करने तथा उनका अवलोकन करने की संभावना प्रदान करती है, जिससे उन्हें योजना बनाने एवं कार्रवाही करने में सहायता मिलती है।(दास, 2012)

पीआरए तकनीक के लाभ

1. सहभागिता ग्रामीण मूल्यांकन समीक्षा ग्रामीण स्तर पर समस्याओं की पहचान करने में सहायक होती है तथा नीतियों के उपयुक्त नियमन एवं कार्यान्वयन में सहायता करती है।

2. यह तकनीक ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के कार्यान्वयन एवं मूल्यांकन के दौरान सामुदायिक स्तर पर निगरानी रखने को सुनिश्चित करती है।

3. अन्य तकनीकों की तुलना में इस तकनीक द्वारा एकत्रित किए आंकड़े अधिक विश्वसनीय होते हैं तथा किसी प्रकार के पूर्वाग्रह से मुक्त होते हैं।

पीआरए तकनीक की हानियाँ

1. स्थानीय समुदायों की प्रत्यक्ष भागीदारी के कारण, इस प्रक्रिया में कभी–कभी आवश्यक समय तथा बजट से अधिक लग सकता है।

2. चूंकि, अध्ययन के अंतर्गत समुदाय के लोगों में वैचारिक मतभेद हो सकता है, इसलिए एक शोधकर्ता के लिए सबके साथ सामंजस्य बैठा पाना कठिन हो जाता है। यह कभी कभी टकराव की परिस्थिति भी उत्पन्न कर देता है।

3. कुछ समुदायों में अन्य पर किसी एक पक्ष का प्रभुत्त्व आंकड़ों के निष्पक्ष संकलन की प्रक्रिया को बाधित करता है तथा इस परिस्थिति में अंतिम परिणाम कुछ ही लोगों के विचारों को प्रतिबिम्बित करते हैं।

आरआरए एवं पीआरए उपकरण

तीव्र ग्रामीण मूल्यांकन तथा सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन तकनीक का उपयोग करते समय व्यावहारिक मानव वैज्ञानिकों द्वारा कुछ निश्चित साधन उपयोग किए जाते हैं। यह हैं:

1) **फोकस सामूहिक चर्चाः** भाग 11.2.2 देखें।

2) **संसाधन मानचित्रणः** संसाधन मानचित्रण एक तकनीक है जिसका उपयोग व्यावहारिक मानव वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न रूपों में अनेक वर्षों से किया जाता रहा है। इसे सामुदायिक संसाधन मानचित्रण अथवा परिसंपत्ति मानचित्रण अथवा पर्यावरणिक अवलोकन के नाम से भी जाना जाता है, जो एक प्रणाली–निर्माण उपाय है जिसका उपयोग चरणों की एक व्यापक शृंखला में विभिन्न समूहों द्वारा

परिसंपत्तियों एवं नीतियों को स्पष्ट तंत्र उद्देश्यों, तकनीकों तथा अपेक्षित नतीजों के प्रति अनुकूलित करने के लिए किया जाता है।

3) **सामाजिक मानचित्रणः** सामाजिक मानचित्रण एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई शोधकर्ता अध्ययन के अंतर्गत किसी क्षेत्र की सामाजिक–आर्थिक स्थितियों के बारे में गाँव के डिज़ाइन, जनसांख्यिकी, भाषा, धार्मिक आस्थाएं, अर्थव्यवस्था इत्यादि के बारे में जानकारी एकत्रित करते हुए अवलोकन करता है। सामाजिक मानचित्रण व्यावहारिक मानव वैज्ञानिक अध्ययनों के लिए बहुत उपयोगी है चूंकि यह हमें लोगों के सामाजिक परिवेश तथा एक दूसरे के साथ सम्बन्धों एवं उनके माहौल के बारे में अवगत कराता है।

अपनी प्रगति जांचें

3) तीव्र ग्रामीण मूल्यांकन (आरआरए) से आप क्या समझते हैं?

....

....

....

....

....

4) फोकस समूहिक चर्चा में अंतर्निहित पड़ावों की व्याख्या कीजिये।

....

....

....

....

....

5) आरआरए एवं पीआरए को परिभाषित कीजिये।

....

....

....

....

....

6) आरआरए एवं पीआरए में उपयोग किए जाने वाले उपकरणों की संक्षेप में चर्चा कीजिये।

....

....

....

....

....

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

11.2.5 सहभागी क्रिया अनुसंधान और मूल्यांकन

शोधकार्य एवं मूल्यांकन के लिए सहभागी विधियों में विचारपूर्वक ढंग से उन व्यक्तियों एवं समूहों को सम्मिलित किया जाता है जो सामान्यतः योजना एवं प्रक्रिया के क्रियान्वयन पर किए जा रहे अध्ययन के कारण प्रभावित होते हैं(सहभागी क्रिया अनुसंधान और मूल्यांकन, 2021)। इसके अतिरिक्त, यह विधि स्थानीय संस्कृतियों, विचारों, समस्याओं एवं पहलुओं के प्रतिबिंब को आश्वस्त करती है। शोधकार्य एवं मूल्यांकन के प्रति सहभागी दृष्टिकोणों को समान्यतः तीन व्यापक श्रेणियों में संयोजित किया जा सकता है तथा प्रत्येक की यहाँ संक्षेप में व्याख्या की गयी हैः

1. **सहभागी शोधकार्य**ः इस प्रकार का शोधकार्य उन मानव विज्ञानियों द्वारा किया जाता है जो शैक्षणिक अथवा अन्य व्यावसायिक क्षेत्रों में कार्यरत हैं। यह शोधकर्ता स्थानीय लोगों अथवा समुदायों को अपने साथ सम्मिलित कर लेते हैं अथवा अपने दल में शामिल कर लेते हैं, जिन्हे अन्यथा किसी शोध अध्ययन की 'विषयवस्तु' कहा जाता। शोधकार्य का यह रूप अवलोकन के अंतर्गत आने वाले समूहों, व्यक्तियों अथवा संस्थाओं की स्थिति में परिवर्तन लाने के बजाय सर्वाधिक विद्वतापूर्ण जगत में ज्ञान में वृद्धि करने के लिए उपयोग में लाया जाता है।

2. **सहभागी अभियान शोधकार्य (पार्टिसिपेटरी एक्शन रिसर्च)**(PAR)एक तकनीक है जो 1940 के दशक से उपयोग में है। इसमें शोधकर्ता एवं सहभागी एक साथ मिलकर अध्ययन करते हैं तथा अपने समुदाय में परिवर्तन लेकर आते हैं। स. आ. शो. प्रजातन्त्र को बढ़ावा देने को लक्षित करता है तथा असमानता को चुनौती देता है चूंकि इसका लक्ष्य अंतिम केंद्र बिन्दु तक सामाजिक बदलाव पर होता है। सहभागी अभियान शोधकार्य की शुरुआत समुदाय के सदस्यों की मदद से किसी समस्या की पहचान के साथ होती है तथा इसके बाद अन्य तकनीकों जैसे एफजीडी तथा व्यवस्थित साक्षात्कारों के माध्यम से आंकड़े एकत्रित किए जाते हैं। जब आंकड़ों को एकत्रित एवं उनका विश्लेषण कर लिया जाता है, तब स्थानीय लोगों के साथ एक समेकित योजना तैयार की जाती है तथा अंततः सभी के द्वारा एक सतत कार्रवाही की जाती है।

3. **सहभागी मूल्यांकन**ः किसी मानव विज्ञानी के अध्ययन के अंतर्गत समुदाय के सदस्यों के साथ समेकित रूप से मिलकर किए कार्यों का मूल्यांकन करने की सदैव आवश्यकता बनी रहती है। उस स्थिति में क्रियान्वयन के बाद अथवा बीच में किसी नीति, योजना अथवा अभियान की प्रभावशीलता तथा/अथवा प्रभाव को जाँचने के लिए सहभागी मूल्यांकन का उपयोग किया जाता है।सहभागी मूल्यांकन के मामले में, इनका संचालन उन विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है जो सहभागी दृष्टिकोण का उपयोग करते हैं, अथवा इन मूल्यांकनों को बिना किसी व्यावसायिक मूल्यांकनकर्ता की संलिप्तता के मात्र व्यावहारिक मानव विज्ञानियों द्वारा समुदाय के सदस्यों के सहयोग द्वारा डिज़ाइन एवं निर्देशित किया गया हो।

चित्र 2: सहभागी अभियान शोधकार्य के चरण

11.2.6 सोंडियो तकनीक

"सोंडियो" का व्युत्पत्ति के आधार पर अर्थ है "आवाज़ उठाना"। यह लोगों की उनके प्राकृतिक परिवेश में उनके कौशल, विचारों, समस्याओं एवं धारणाओं का अध्ययन करने की एक सहभागी शोधकार्य अभियान तकनीक अथवा तीव्र समीक्षा विधि है। सोंडियो परंपरागत सर्वेक्षण विधि से इस अर्थ में भिन्न है कि यह तुलनात्मक रूप से कम समायावधि में आंकड़े प्रस्तुत कर देता है। इसके अतिरिक्त, यह समस्याओं की पहचान करने में, उपलब्ध समाधानों का संयोजन करने में, नीतियों का सूत्रीकरण एवं क्रियान्वयन, अवलोकन एवं मूल्यांकन इत्यादि करने में स्थानीय लोगों की सक्रिय सहभागिता को बढ़ावा देता है। एक सोंडियो उनके बारे में भी जानकारी उपलब्ध करवाता है, जो किसी परंपरागत शोध व्यवस्था में समान्यतः पीछे छूट जाते हैं उदाहरण के लिए, स्त्री एवं सीमित संसाधन ग्राहक (बटलर, 1995)। इस तकनीक में, आंकड़ों को किसी परंपरागत शोधकार्य की तरह मात्र एकत्रित एवं प्रचारित ही नहीं किया जाता बल्कि सहभागी अभियान शोध तकनीक होने के करण, इसमें एकत्रित किए गए आंकड़ों का विश्लेषण करने एवं अंतिम अभियान का रूप देने के लिए समुदाय के सदस्यों की समान रूप से भागीदारी सम्मिलित होती है।

अब, हमें सोंडियो अथवा तीव्र सैन्य परीक्षण तकनीक की आवश्यकता क्यो होती है? चूंकि यह अन्य उपलब्ध तकनीकों की तुलना में शोध क्षेत्र में अत्यधिक कम समय लेता है तथा अन्य साधनों जैसे औपचारिक सर्वेक्षण, मूल सूचनाप्रदाता का साक्षात्कार तथा सहभागी अवलोकन के तत्त्वों पर भी विचार करता है। तीव्र समीक्षा उस प्राकृतिक व्यवस्था का विवरण देने के लिए किफ़ायती, उपयुक्त एवं सटीक भी है, जिसमें अध्ययन के अंतर्गत समूह स्थित होता हैं। पक्षपात एवं रूढ़िवादी धारणाओं की कमी के कारण, यह तकनीकें बाहरी पूर्वाग्रह को प्रभावशाली ढंग से कम करने में समर्थ होती हैं, जब विषय स्थानीय आवश्यकताओं एवं शंकाओं से संबधित हो।

सोंडियो तकनीक के लाभः

1. यह किसी विशेष समूह के सामने आने वाली किसी परिस्थिति अथवा किसी समस्या के बारे में गहरी समझ उपलब्ध करवाती है।

2. सोंडियो व्यावसायिकों एवं स्थानीय लोगों के बीच घनिष्ठता निर्मित करने में सहायक होती है, जिससे बहुमूल्य गुणात्मक आंकड़े एकत्रित होने की संभावना बनती है।

3. यह तकनीक लागत एवं समय बचाने वाली है तथा स्थानीय लोगों की तरफ से व्यापक भागीदारी एवं संचार को सुगम करती है।

सोंडियो तकनीक की हानियाँः

1. सोंडियो की परिसीमाओं में से एक यह है कि किसी आबादी के एक बड़े भाग के लिए इसको सामान्यीकृत नहीं किया जा सकता।

2. यह सभी उत्तरदाताओं एवं उनकी गोपनियता के प्रति समान व्यवहार को आश्वस्त नहीं कर सकती।

3. यदि इसका उपयोग शीघ्रतापूर्वक कर दिया जाए तो यह समुदाय के साथ अच्छे संबंध विकसित कर पाने में असफल हो सकती है, जिससे साक्षात्कारदाताओं को यह अनुभूति होने की संभावना बनती है कि उनका किसी उद्देश्य के लिए 'उपयोग' किया जा रहा था।

11.2.7 एंथ्रोपोमेट्री (मानवमिति)

एंथ्रोपोमेट्री संज्ञा यूनानी शब्दों,एंथ्रोपोस (मानव) एवं मेट्रोन (परिमापन) से बनती है। इसलिए, व्युत्पत्ति के आधार पर एंथ्रोपोमेट्री का अर्थ है, किसी मानव का परिमापन अथवा मानवों के परिमापन से है (हेरोन, 2006)। यह संज्ञा एक फ्रांसीसी प्रकृतिवादी द्वारा दी गयी थी, जिसे जोर्जेस कूवियर (1769–1832) नाम से जाना जाता था। इस तकनीक में, स्थिर (शारीरिक रचना एवं आकार) एवं गतिशील (शारीरिक संचालन एवं शक्ति क्षमता तथा स्थान का उपयोग) एंथ्रोपोमेट्री तक पहुँच बनाने के लिए विभिन्न शारीरिक परिमापन लिए जाते हैं (पूर्वोक्त)। इस तकनीक का उपयोग सर्वाधिक भौतिक मानव विज्ञान से संबन्धित अध्ययनों में किया जाता है परंतु इन दिनों यह अपनी छाप व्यावहारिक मानव विज्ञान के क्षेत्र में भी छोड़ रही है। कपड़े डिज़ाइन करने से लेकर, साधन एवं उपकरण तक, एंथ्रोपोमेट्री श्रमदक्षता शास्त्र से भी जुड़ चुका है। श्रमदक्षता शास्त्र एक व्यावहारिक विज्ञान है जो उन वस्तुओं के डिज़ाइन एवं व्यवस्थापन से संबन्धित है जिनको लोग उपयोग करते हैं। जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है, यह उपकरण, गेयर्स, वर्दी, सीट इत्यादि को डिज़ाइन करने के लिए एंथ्रोपोमेट्रिक परिमापनों का उपयोग करने की प्रक्रिया है। एक शोधकार्य साधन के रूप में,मानव आबादियों में वंश, लिंग तथा शारीरिक आयामों के आधार पर पायी जाने वाली विभिन्नताओं के विश्लेषण में भी एंथ्रोपोमेट्री का बहुत बड़ा योगदान रहा है।इसी प्रकार, इस तकनीक का उपयोग अदालती विज्ञानों में कांकालिक अवशेषों की पहचान एवं उनके समुचित विश्लेषण एवं विवेचना करने में भी किया जाता है। एंथ्रोपोमेट्री में अग्रिम ज्ञान एवं प्रशिक्षण के साथ, मानव विज्ञानी लिंग, आयु एवं प्रजाति के आधार पर कांकालिक अवशेषों में सरलतापूर्वक भेद एवं उनका वर्गीकरण कर सकते हैं। इसलिए,

हम यह देखते हैं कि एंथ्रोपोमेट्री की तकनीक अनेक क्षेत्रों में प्रयुक्त होती है तथा बहुविषयी शोधकार्य में भी अपना प्रभाव बनाए रखती है।

एंथ्रोपोमेट्री में उपयोग होने वाले उपकरण :

एंथ्रोपोमेट्री आधारित परिमाप विभिन्न प्रकार के साधनों के उपयोग द्वारा प्राप्त होते हैं, जिनमें से कुछ हैं:

उपकरण	**जिसके परिमाप के लिए उपयोग**
एंथ्रोपोमीटर	शरीर के भागों की लंबाई एवं परिधि
स्टेडियोमीटर	ऊंचाई
बाएकॉन्डीलर कैलिपर्स	अस्थि व्यास
स्किन्फ़ोल्ड केलिपर्स	त्वचा की मोटाई एवं त्वचा के नीचे की चर्बी
स्केल्स (वजन मापक)	वज़न

*स्रोत:*बायोलॉजी डिक्शनरी (www.biologydictionary.net/anthropometry/)

अपनी प्रगति जांचें

7) पार्टिसिपेटरी एक्शन रिसर्च (PAR) को परिभाषित करें।

....

....

....

....

....

8) आप *सॉडियो* तकनीक से क्या समझते हैं?

....

....

....

....

....

9) एंथ्रोपोमेट्री में प्रयुक्त होने वाले कुछ उपकरणों को उनके उपयोग के साथ बताएं।

....

....

....

....

....

11.3 प्रभावशाली उपयोग के साधन

- **संचार कौशलः** प्रभावशाली संचार किसी व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता की कुंजी है। मानव वैज्ञानिक ज्ञान के उपयोग के संदर्भ में, किसी शोधकर्ता की संचार दक्षताओं की बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। कार्यक्षेत्र के प्रकार (संस्था, समुदाय अथवा व्यक्ति) के आधार पर, किसी व्यावहारिक मानव विज्ञानी से सकारात्मक मनोदृष्टि एवं सकारात्मक शब्दावली के साथ आगे बढ़ने की अपेक्षा की जाती है। एक बार कार्यक्षेत्र में उतर जाने के बाद,किसी व्यवसायी से अपेक्षा होती है कि वह समुदाय के लोगों से आँख से आँख मिलाकर काम करे तथा उसके संचार के गैर–मौखिक पहलू मौखिक भाग के साथ समक्रमिक बने रहने चाहिए। अच्छे संबंध तभी स्थापित हो सकते हैं जब कोई मानव विज्ञानी अध्ययन के अंतर्गत होने वाले लोगों का विश्वास जीत सके तथा जिसका प्रतिबिंब इस बात में देखने को मिलेगा कि वह कैसे लोगों के साथ बात–चीत करता है। व्यावहारिक शोधकर्ता से अपेक्षा रहती है कि वह संचार को इस प्रकार से संयोजित एवं निष्पादित करे कि वह अपेक्षित प्रतिक्रियाओं को प्राप्त करने में सहायक हो सके।

- **अभिनव सोचः** अभिनव सोच किसी व्यक्ति को एक अलग सोच बनाने में सक्षम बनाती है। व्यावहारिक मानव विज्ञान में, अभिनव सोच अधिक प्रभावशीलता एवं कार्यकुशलता के साथ समस्याओं का समाधान प्रदान करने में सहायता प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त, व्यावसायिक जगत में, ऐसी सोच रखने वाले मानव विज्ञानियों की सदैव मांग बनी रहती है। चूंकि, वह अच्छे व्यावसायिक एवं रचनात्मक विचार प्रदान करने में समर्थ होते हैं।निगमित जगत में व्यावहारिक शोधकार्य त्वरित परिणामोन्मुखी होता है तथा सामान्यतः हम नतीजे तक पहुँचने से पहले हर कदम का सावधानीपूर्वक परिमापन करने की चेष्टा रखते हैं। अभिनव सोच रखने वाले शोधकर्ताओं के संदर्भ में ऐसा नहीं है, चूंकि उनके लिए वास्तविक चुनौतियों का सामना करना एवं अभिनव विचार प्रस्तुत करना एक प्रकार का साधन माना जाता है। सभी व्यावहारिक शोधकर्ताओं एवं व्यावसायिकों को यथोचित प्रशिक्षण दिया जाता है, जिससे किसी व्यक्ति विशेष की रचनात्मक शक्तियों को प्रबल बनाया जाता है। (दास, 2012)

- **कार्यक्षेत्र का ज्ञानः** कार्यक्षेत्र में उतरने से पहले, किसी व्यावहारिक शोधकर्ता को लोगों, संस्थाओं, सामाजिक प्रथाओं, अर्थव्यवस्था एवं भाषा इत्यादि का अग्रिम ज्ञान होना आवश्यक है। यह अग्रिम ज्ञान हमें उन आंकड़ों के प्रकार के बारे में पहले से ही जानने में सहायता प्रदान करता है तथा किसी कार्यक्षेत्र विशेष में क्या अपेक्षा रखनी है, जिनकी हमें आवश्यकता है। लोगों, संस्था अथवा समुदायों के बारे ज्ञान पहले से उपलब्ध साहित्य अथवा कार्यक्षेत्र में संबंध स्थापित करने के द्वारा प्राप्त किया जा सकता हैं। व्यावहारिक शोधकार्य में बाद वाले को प्राथमिकता दी जाती है चूंकि यह किसी प्रकार के पूर्वाग्रह से ग्रस्त नहीं है तथा अधिकतर परिस्थितियों में यह अपने आप में सत्य सिद्ध होती है। इसलिए, यदि आप वास्तविक जगत के मुद्दों की पहचान एवं उनका समाधान करना चाहें, तो हमें उन घटकों के बारे में संपूर्णतः सचेत होना पड़ेगा जो प्रमुख रूप से प्रभावित होते हैं।

- **सहयोगात्मक लचीलापन:**इसका अर्थ यह है कि किसी व्यावहारिक शोधकर्ता से यह अपेक्षित होता है कि वह संचार एवं सहयोग के संदर्भ में लचीलापन अपनाए। सहयोग का अर्थ है, एक एकल इकाई के रूप में मिलकर काम करते हुए न्यूनतम प्रयासों द्वारा अधिकतम नतीजे सुनिश्चित करना। जबकि लचीलेपन से तात्पर्य है किसी परिस्थिति के अनुकूल होना तथा जहां कहीं भी आवश्यक हो वहाँ पर बदलावों को अपनाना। इसलिए, किसी व्यावहारिक शोध अध्ययन में, एक मानव विज्ञानी अपने ग्राहकों/समुदाय के सदस्यों के साथ उत्तरदायितत्व को साझा करता/करती है तथा एक ऐसी साझेदारी की भावना का निर्माण करता/करती है जहां पर हर व्यक्ति एक दूसरे के सुझावों एवं समाधानों को स्वीकार अथवा अस्वीकार करने में सहजता हो। इसलिए, सहयोगात्मक लचीलापन एक साधन के रूप में साझेदारियों एवं परस्परता को बढ़ावा देता है, जिसके परिणामस्वरूप नीतियों की बेहतर पहचान एवं क्रियान्वयन हो पता है तथा अंततः कार्रवाही हो पाती है।

11.4 सारांश

इस इकाई में, हमने विभिन्न प्रकार के साधनों एवं तकनीकों के बारे में सीखा, जिनका उपयोग एक व्यावहारिक मानव विज्ञानी द्वारा, किसी व्यक्ति से लेकर किसी संस्था तक, विभिन्न कार्यक्षेत्रीय परिस्थितियों में किया जा सकता है। हमने यह भी जाना कि कैसे व्यावहारिक अनुसंधान कार्यप्रणाली के संदर्भ में मौलिक मानव वैज्ञानिक अनुसंधानों से भिन्न है। व्यावहारिक मानव वैज्ञानिक शोधों में, हमने जाना कि दो प्रकार की तकनीकें होती हैं अर्थात परंपरागत एवं अभिनव। चूंकि व्यावहारिक मानव वैज्ञानिक शोधकार्य समस्याओं की त्वरित पहचान एवं उनके समाधानों पर केन्द्रित होता है, हमने उन आवश्यक तरीकों को सीखा जिनके माध्यम से हम जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। अंततः, आपको कुछ ऐसे साधनों या उपकरणों से अवगत कराया गया जो उस समय महत्त्वपूर्ण हैं जब हम व्यावहारिक शोधकार्य करने का विचार कर रहे हों अर्थात संचार कौशल, कार्यक्षेत्र का ज्ञान, इत्यादि।

अतः, यह इकाई संक्षेप में उन तकनीकों का अवलोकन प्रदान करती है, जो आपके आगे की उच्च सेमेस्टर में शोधकार्य करते हुए काम आएंगी। मानव वैज्ञानिक शोधकार्य के बारे में सीखने के लिए अभी और भी बहुत कुछ है तथा जिसका अन्वेषण आपको अपने उच्चतर अध्ययनों के दौरान करना है।

11.5 संदर्भ

Butler, L. M. (1995). *The 'SONDEO': A Rapid Reconnaissance Approach for Situational Assessment.* WREP 127, Partnership in Education and Research.

Das, M. (2012). Tools for Professional Practice. In *Transforming Knowledge into Praxis* (pp. 5-20). New Delhi: Indira Gandhi National Open University.

Herron, R. (2006). Anthropometry: Definition, Uses, and Methods of Measurement. In *International Encyclopedia of Ergonomics and Human Factors* (Second ed.). New York: CRC Press.

Kedia, S., & Bennet, L. A. (2005). Applied Anthropology. In *Anthropology, from Encyclopedia of Life Support Systems.* Oxford, United Kingdom: EOLSS Publishers.

Pandey, G. (2018). *Anthropological Research Methodology: Theory and Practice.* New Delhi: Concept Publishing Company.

Participatory Action Research and Evaluation. (2021). Retrieved April 19, 2021, from Organizing Engagement: https://organizingengagement.org/

UCLA, L. (Director). (1987). *Rapid Assessment Procedures for Nutrition and Primary Health Care* [Motion Picture].

11.6 आपकी प्रगति की जाँच के लिए उत्तर

1) उत्तर हेतु अनुभाग 11.0 देखें।
2) अनुभाग 11.1 का संदर्भ लें ।
3) अनुभाग 11.2.1 देखें।
4) अनुभाग 11.2.2 के चित्र 1 को देखें।
5) उत्तर हेतु अनुभाग 11.2.3 एवं 11.2.4 को देखें।
6) उत्तर हेतु अनुभाग 11.2.4 देखें।
7) अनुभाग 11.2.5 देखें।
8) अनुभाग 11.2.6 देखें।
9) उत्तर हेतु अनुभाग 11.2.7 में दी गयी तालिका को देखें।

इकाई 12 क्षमता विकास*

इकाई की रूपरेखा

12.0 परिचय

12.1 विकास में क्षमता विकास के महत्त्व को समझना

12.2 क्षमता विकास की जटिलताएँ

12.3 सारांश

12.4 संदर्भ

12.5 आपकी प्रगति की जाँच के लिए उत्तर

अधिगम के परिणाम

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी सक्षम होंगेः

- क्षमता निर्माण एवं क्षमता विकास के बीच संकल्पनात्मक भेद को परिभाषित करने में;
- विकास विमर्श में क्षमता विकास के पीछे की अवधारणा की व्याख्या करने में;
- क्षमता विकास एवं दाता संचालित विकास विमर्श की मानवशास्त्रीय एवं समाजशास्त्रीय समझ के बीच भेद स्पष्ट करने में; तथा
- क्षमता विकास से संबन्धित कुछ जटिलताओं की पहचान करने में।

12.0 परिचय

'क्षमता विकास'(कैपसिटी डेवलपमेंट) से यह प्रत्यक्ष रूप से पता चलता है कि यह प्रक्रिया विकास विमर्श का एक भाग है जिसका ध्येय रूपान्तरण एवं सामाजिक परिवर्तन लाना है। मानव विज्ञानियों ने विकास विमर्श में विकास के समन्वयक के साथ साथ विकास के आलोचकों के रूप में सदैव एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

"पिछले दो दशकों में, क्षमता निर्माण विकास एजेंडा से स्पष्ट रूप से अलग हो गया है और अब इसे अपने आप में शासन, प्रशासन, भविष्य के निर्माण और 'प्रगति' के एक उपकरण के रूप में महत्व दिया जाता है। आज के युग में स्थलों की हैरान कर देने वाली श्रंखला अपने आप को प्रस्तुत करती हैं: यह सरकारी शब्द–कोशों में देखा जा सकता है (हुजेस एवं अन्य. 2010), थर्ड सैक्टर(लिनेल 2003; ओ'रिले 2011), धार्मिक (मेकडोगल 2013), चिकित्सकीय (केली 2011; गिजलर एवं अन्य. 2014), पर्यावरणिक (यूनाइटेड स्टेट्स एनवायरनमेंटल प्रोग्राम (यूईएनईपी)2002) तथा यहाँ तक कि जाने–पहचाने शैक्षणिक कार्यसूचियों में भी (दानाहर एवं अन्य. 2012; फोतेंहोर एवं अन्य. 2013, 2016)" (डगलस–जोन्स एवं शफनर, 2017)। यद्यपि इस अवधारणा को विभिन्न विषयी एवं क्षेत्रीय विमर्शों में अपना ही एक महत्त्व मिलता है, तथापि विकास के साथ इसकी परस्परता को इन अंतरभागीय क्षेत्रों के माध्यम से समान प्रासंगिकता मिली है जिसके कारण इसकी संभावनाओं में विस्तार हुआ है। एक छत्र विषय

*डॉ. इंद्राणी मुखर्जी पोस्ट–डॉक्टोरल फेलो, मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय,दिल्ली

अनुशासन के रूप में मानवविज्ञान जो समाज में एक समग्र परिप्रेक्ष्य और परस्पर जुड़ाव पर केंद्रित है, क्षमता विकास के विमर्श में प्रभावी ढंग से शामिल होने की एक मजबूत स्थिति में रहा है।

विकास विमर्श ने अपने आप को ऊपर से नीचे के उस परिप्रेक्ष्य में स्थापित किया जब वैश्विक स्तर पर ऐतिहासिक रूप से स्थापित औपनिवेशिक शक्तियों ने पैतृक दृष्टिकोण अपनाते हुए द्वितीय विश्व युद्ध उपरांत के परिदृश्य में तीसरी दुनिया के कम भाग्यशाली देशों की ओर मदद के लिए हाथ बढ़ाया। मदद के लिए बढ़ाए गए इस हाथ को अनिवार्यतः आर्थिक मदद एवं तकनीक के हस्तांतरण के रूप में समझा गया। हालांकि, क्षमता विकास की अवधारणा विकास के विमर्श में लोगों की भागीदारी के रूप में एक महत्त्वपूर्ण मोड़ लेकर आती है। इससे पहले की हम इस परिवर्तन (अगले भाग में जिस पर चर्चा की गयी है) के महत्त्व के बारे में बात करें, आइये सर्वप्रथम क्षमता के बारे में बहुधा प्रयुक्त की जाने वाली दो संज्ञाओं पर नज़र डालें अर्थात विकास के विमर्श में 'क्षमता निर्माण' एवं 'क्षमता विकास' तथा देखें कि उनका अर्थ क्या है और वह कैसे एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

'क्षमता निर्माण' (कैपसिटी बिल्डिंग) शब्द 1970 के दशक में संयुक्त राष्ट्र में वित्तीय विकेन्द्रीकरण नीतियों को लागू करने और राज्य एवं स्थानीय सरकारों की क्षमता को उन्नत करने की आवश्यकता के संदर्भ में अस्तित्त्व में आई। इस शब्द ने 1980 के दशक के अंत और 1990 (ईड, 1997) के दशक की शुरुआत में विकास शब्दावली में एक संवर्धित दिलचस्पी का अनुभव किया, जब 'क्षमता' उन्नति की संज्ञाओं से संपृक्त करके देखी जाने लगी जैसे 'मज़बूत करना', 'संवर्धन करना' तथा स्वयं 'विकास' (फुदुका–पर्र एवं अन्य. 2002; यूनाइटेड नेशन्स डेव्लपमेंट प्रोग्राम (यूएनडीपी) 1998, 2003)। एक सामान्य परिभाषा के अनुसारः "अर्जन, प्रोत्साहन, प्रौद्योगिकी, एवं/अथवा प्रशिक्षण के माध्यम से किसी संस्था के ज्ञान, उत्पादन दर, प्रबंधन, कौशल एवं अन्य क्षमताओं को योजनबद्ध ढंग से विकसित करना (अथवा संवर्धित करना) क्षमता–निर्माण कहलाता है" (ईपीआरएस, 2017)। समकालीन मानवशास्त्रीय भाषा में, क्षमता को क्षमताओं और संभावनाओं के संदर्भ में समझा जाता है और इन क्षमताओं और संभावनाओं को क्रियान्वित करने की संभावना को समझा जाता है। मानव वैज्ञानिकों ने मूलशब्द के रूप में संभाव्यता के अपने नवीनतम अवलोकन में, टौसिंग एवंअन्य. (2013) ने इसे अभिव्यक्त करने के लिए ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी (ओईडी) द्वारा दी गयी परिभाषा का उपयोग किया है "कोई क्षमता, कोई संभाव्यता; किसी व्यक्ति, वस्तु इत्यादि के विकास के लिए अव्यक्त क्षमता की एक घटना है जिसमें क्षमता रखने की गुणवत्ता समाविष्ट होती है"। इसके अतिरिक्त डगलस–जोंस एंड शफ़्नर (2017:5) स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि "यह एक ऐसी परिस्थिति उत्पन्न करती है जिसमें हम एक क्षमता जो कि धारण (इन पोटेन्शिया) की हुई है तथा वह क्षमता जिसे अभिव्यक्त (इन अक्चुलिटास) किया गया है के बीच एक संबंध पर विचार कर सकते हैं, जिसे आगे क्रियान्वयन के लिए आगे लाया जा रहा है"। इस संदर्भ में, क्षमता निर्माण "आशा एवं संभाव्यता से भरी हुई एक संज्ञा हैं, लेकिन यह अपर्याप्तता अथवा अनुपस्थिति की धारणाओं से भी संचालित होती है, क्योंकि जिस भविष्य की ओर यह काम कर रही है, वह वर्तमान की तुलना में अधिक वांछनीय प्रतीत होता है" (डगलस–जोन्स एवं शफनर, 2017:1)। "परिवर्तन की धारणा उन अनेक दस्तावेजों का केन्द्रबिन्दु है जिनमें क्षमता–निर्माण/विकास अवधारणाओं को सर्जित किया जाता है। यह उन जटिल तरीकों के बारे में सामाजिक वैज्ञानिक अवधारणाओं को उद्धृत करता है जिनमें संस्थाएं

परिणत हुई होती हैं, परिवर्तन को प्रभावित करने वाले कारकों की बहुलता, प्रक्रिया का प्रवाही एवं गतिशील चरित्र एवं प्रभावित व्यक्ति विशेषों एवं संस्थाओं के स्वामितत्व एवं नेतृत्त्व का महत्त्व" (ईपीआरएस, 2017:4)। जैसा कि पहले भी उल्लेख किया जा चुका है, विकास एक प्रक्रिया है जिसमें मदद का हस्तांतरण हावी रहता है। अतः बावजूद "आवश्यक परिवर्तनकारी प्रक्रियाओं की स्वीकृत जटिलता एवं प्रवाहशीलता के, दाता परिवर्तनकारी प्रक्रियाओं के सार दर्शाने तथा किस प्रकार उन पर असर डाला जा सकता है एवं उन्हे प्रभावित किया जा सकता है, का प्रयास करते हुए कदम–दर–कदम तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए क्षमता विकास प्रयास के बारे में रिपोर्ट करते हैं। कुछ दाता परिमापन योग्य परिणाम संकेतक प्रदान करने का प्रयास भी करते हैं" (ईपीआरएस, 2017:4)।

"हालांकि क्षमता–निर्माण(कैपसिटी बिल्डिंग) को अभी भी व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है, फिर भी एक नयी संज्ञा को उछाला गया– 'क्षमता विकास' [2006 के ओईसीडी डीएसी (डेव्लपमेंट असिस्टेंस कमेटी) पत्र में अभिव्यक्त, द चैलेंज ऑफ कपेसिटी डेव्लपमेंट– वर्किंग टूवर्ड्स गुड प्रैक्टिस]तथा यह विकास समुदाय का एक मनपसंद विकल्प बन गया है। जबकि 'क्षमता–निर्माण' धरातल से शुरू करके कुछ नया निर्माण करने की ओर इंगित करता है, वहीं दूसरी ओर एक पूर्व–निर्धारित रूप–रेखा के अनुसार 'क्षमता विकास' का अभिप्राय एक ऐसे दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति से है, जिसमें स्थानीय पात्रों द्वारा वर्तमान में धारण की हुई मौजूदा कौशल एवं ज्ञान को परिवर्तन की एक गतिशील एवं लचीली प्रक्रिया के साथ संचालित किया जाता है" (ईपीआरएस, 2017:1)। कई बार किसी को ऐसा लग सकता है कि 'क्षमता निर्माण' एवं 'क्षमता विकास' शब्दों को एक दूसरे के स्थान पर उपयोग किया जा रहा है तथा दोनों ही शब्दों में उनके व्यापक समझ के अर्थ में समानता भी है, हालांकि दोनों शब्दों को विकास के विमर्श में उनके ऐतिहासिक एवं वंशावली आधारित प्रगति के अर्थों में देखने की आवश्यकता भी है।

12.1 विकास में क्षमता विकास के महत्त्व को समझना

अमरीकी राष्ट्रपति हैरी ट्रूमन की 'पॉइंट फोर प्रोग्राम' (1949 के उदघाटन सम्बोधन में राष्ट्रपति हैरी एस. ट्रूमन का चौथा बिन्दु) वाली घोषणा को बहुधा विकास के शुभारंभ के लिए एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण क्षण के रूप में, दुनियारभर के स्तर पर तीसरी दुनिया के देशों में प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण द्वारा विकास एवं रहने लायक परिस्थितियों को बढ़ावा देने वाले एक जोख़िम भरे काम के रूप में उद्धृत किया जाता है। द्वितीय विश्व युद्धोत्तर पुनर्निर्माण, विमुक्तिकरण एवं शीत युद्ध की शुरुआत होना विकास को बढ़ावा देने के लिए लक्षित बढ़ते हुए सहायता कार्यक्रमों के तात्कालिक संदर्भों में से हैं। मित्र–राष्ट्रों ने मिलकर समस्या के समाधान को सुविधाजनक बनाने के लिए एक नवीन वैश्विक संस्थागत खांचे का निर्माण कियाः संयुक्त राष्ट्र, जिसमें इसकी विशिष्ट तकनीकी सहायक संस्थाएं शामिल थीं जैसे कि वर्ल्ड हैल्थ ऑर्गनाइज़ेशन (डबल्यूएचओ), फूड एंड एग्रिकल्चर ऑर्गनाइज़ेशन (एफ़एओ), एवं यू.एन. एडुकेशनल, साईंटिफ़िक एंड कल्चरल ऑर्गनाइज़ेशन (यूनेस्को), तथा व्यवस्थित अर्थव्यवस्थाओं ने स्थिरता एवं विकास को सुनिश्चित करने के लिए इंटरनेशनल मोनेटरी फ़ंड (आईएमएफ़) एवं वर्ल्ड बैंक ग्रुप बनाया। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, विकास प्रतिमान में ऐतिहासिक रूप से स्थापित वैश्विक औपनिवेशिक शक्तियाँ शामिल

थीं, जो कम भाग्यशाली तीसरी दुनिया के देशों को सहायता प्रदान करने के लिए पितृकल्पीय नेतृत्व का दृष्टिकोण अपनाती थीं।

हालांकि, 1970 के दशक के प्रारम्भ में, जनता, राजनेताओं एवं कुछ विकास व्यावसायिकों के बीच पिछले दो दशकों में अपनाए गए दृष्टिकोणों को लेकर निराशा उत्पन्न हुई। इन प्रयासों का चरित्र–चित्रण विकासवादी आधुनिकीकरण के सिद्धांतों द्वारा निर्देशित विशालकाय परियोजनाओं एवं केंद्रीकृत नियोजन द्वारा किया गया तथा 'ट्रिकलडाउन इफैक्ट' अथवा जिसे "प्रमुख विकास रूपावली का नृवंशकेन्द्रित तकनीकी उन्मुखीकरण" के रूप में एलेन होबेन द्वारा मान्यता प्रदान करने को चुनौती दी गयी(होबेन, 1982:350)। "बहुत से देशों में, जीवन की गुणवत्ता के सूचकांकों –शिशु मृत्यु–दर, जीवन प्रत्याशा, प्रति व्यक्ति आय, भोजन उत्पादन– में सुधार नहीं हुआ बल्कि यहाँ तक कि वह नीचे गिर गए। देशों में परस्पर एवं अपने स्वयं में ही अमीर एवं गरीब के बीच का अंतर, बढ़ रहा था। इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप, वर्ल्ड बैंक एवं यूएसएड ने 1973 में गरीब पर सीधे रूप से केन्द्रित अपने हस्तक्षेप करने की तीव्रता का आह्वान किया। अपने 'न्यू डाइरैक्शन' दिशा–निर्देशनों के अंतर्गत यूएसएड को अपनी सभी प्रस्तावित परियोजनाओं को कल्पित 'लाभार्थियों' पर पड़ने वाले संभावित प्रभावों के एक सामाजिक स्वास्थ्य विश्लेषण के अंतर्गत लाने की आवश्यकता पड़ी। सारांशतः, सामाजिक चरों पर विचार करने को परियोजना कालचक्र में प्रारम्भिक अवस्था में लायी गयी, जिसके कारण परियोजना के डिज़ाइन एवं यहाँ तक कि नीति पर भी प्रभाव पड़ा। इन कार्यों को और सुगम बनाने के लिए, यूएसएड ने 1980 के दशक के दौरान अपने कर्मियों के रूप में 50 एवं सलाहकारों के रूप में 100 मानव विज्ञानियों की नियुक्ति शुरू की (होबेन, 1982)" (कैस्ट्रो एंड ब्रोकेनशा, 2015:302)।

मानव विज्ञानियों ने विकास नीति एवं उनको लागू करने में सामाजिक एवं सहभागिता–उन्मुख दृष्टिकोणों को बढ़ावा देने में एक बुनियादी भूमिका निभाई। ऐसा करने के लिए, उन्होने अग्रणी ज्ञान, सिद्धान्त, एवं शैक्षणिक एवं व्यावहारिक क्षेत्रों के बीच महत्त्वपूर्ण संबंध दर्शाने वाली पद्धतियों को अपनाया। ऐसा ही एक उदाहरण लोगों के पुनर्वास के लिए व्यापक नीतियों का निर्माण है। वर्ल्ड बैंक एवं अन्य विकास संस्थाओं द्वारा दीर्घकालिक पोषित परियोजनाएं जैसे कि बांध, जिनके कारण एक बड़ी आबादी को विस्थापित होना पड़ता है, जबकि उनके पास पुनर्वसन से निपटने के लिए पर्याप्त दिशा–निर्देश नहीं थे। थेयर स्काडर, एलीसाबेथ कोलसन एवं अन्य मानव विज्ञानियों द्वारा माइकल केरनिया (इसके संस्थापक समाजशास्त्री) के नेतृत्त्व में 1980 के दशक में वर्ल्ड बैंक पर आधारित अपने अग्रणी शोधकार्य ने व्यापक नीतियों को बनाने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान ग्रहण किया (कैस्ट्रो एंड ब्रोकेनशा, 2015)। इसी प्रकार, "नीति एवं अभ्यास दोनों को ही फोरेस्टरी डिपार्टमेंट के फूड एंड एग्रीकल्चर ऑर्गनाइज़ेशन (एफ़एओ) के कम्यूनिटी फोरेस्टरी यूनिट (सीएफ़यू) द्वारा संबोधित किया, जिसका निर्देशन मानव विज्ञानी मरिलिन होसकिंस एवं कैथरीन वार्नर द्वारा 1980 के दशक के मध्य से लेकर 2002 तक किया गया। कम्यूनिटी फोरेस्टरी यूनिट (सीएफ़यू) का लक्ष्य जनता, संसाधन के प्रयोक्ताओं, तकनीकी कर्मियों एवं नीतिनिर्माताओं को लैंगिक विश्लेषण, स्वदेशी ज्ञान प्रणालियाँ, सार्वजनिक संपत्ति प्रणालियाँ, मतभेद विश्लेषण, एवं आजीविका विश्लेषण जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों का ज्ञान देते हुए सहभागिता आधारित प्रकृतिक संसाधन प्रबंधन में संलिप्त करना था। इसने सहभागिता आधारित नियोजन, मूल्यांकन एवं विशिष्ट कार्यों जैसे कि आमदनी उपार्जन

परियोजनाओं के लिए नियमावलियों एवं गाइड को निर्मित किया" (कैस्ट्रो एवं ब्रोकेनशा, 2015:303)।

विकास के अभ्यास ने 1980 के दशक से अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन देखा। संस्थाओं ने रियो में आयोजित 1992 का अर्थ शिखर सम्मेलन में प्रस्तुत की गयी 1987 की बृंडलैंड कमिशन रिपोर्ट के परिणामस्वरूप अपने नाममात्र 'गरीब–समर्थक' प्रतिबद्धता को बनाए रखा। अभ्यर्थियों एवं कर्मठ कार्यकर्ताओं ने विकास के अर्थ को अधिकारों, मानव क्षमताओं, एवं स्वतन्त्रता के साथ जोड़कर देखना शुरू कर दिया। विकासशील देशों में व्यक्ति विशेषों एवं संस्थानों की क्षमता को मजबूती प्रदान करना उस धीरे–धीरे उभरती हुई विकास नीति की सफलता के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है, की धारणा वाली सैद्धांतिक बहस धीरे धीरे 1995 और 2005 के बीच अपने चरम पर आ पहुंची (ईपीआरएस, 2017)। "विकास गतिविधियों की संस्थानिक संभावनाएं और अधिक विस्तृत हो गईं, चूंकि गैर–सरकारी संगठन (एनजीओ), स्वदेशी लोग, सामाजिक आंदोलन, एवं अन्य कार्यकर्ता बढ़ते क्रम में इस परिदृश्य में दिखाई देने लगे। कई एनजीओ ने वित्त–पोषण का अनुसरण किया एवं प्रदाता–संचालित मुद्दों को अपनाया, परंतु अन्य, जिनमें अंतर्राष्ट्रीय एवं स्थानीय दोनों ही थे, ने अपने अपने मुद्दों पर बल दिया। ग्रामीण बैंक का उदय, स्थानीय सशक्तिकरण के लिए एक आधारभूत आंदोलन का नतीजा है, जिसने विशेष रूप से महिलाओं एवं परिवारों को केन्द्रित करते हुए बहुत छोटे ऋण द्वारा ऊपर से नीचे की ओर विकास की नवीन रचनात्मक संभावनाओं का दुनियाभर में प्रदर्शन किया(युनूस, 2007)। अंतर्राष्ट्रीय प्रदाताओं ने, बहुत से विविध कारणों से, समुदायों द्वारा सहभागिता के लिए नवीन राजनैतिक संभावनाओं का सृजन करते हुए विकेंद्रीयकरण को बढ़ावा दिया। यह सब प्रवृत्तियाँ अंतर्राष्ट्रीय विकास संस्थाओं के भीतर एवं बाहर 'लोगों को आगे रखो' वाली बात को बनाए रखने के लिए सामान्यतः मानव विज्ञानियों एवं अन्य द्वारा चलाये जा रहे अभियानों में सटीक बैठती हैं(कैस्ट्रो एंड ब्रोकेनशा, 2015:303)।

1950 के दशक से प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय प्रदाताओं द्वारा प्रदान की जा रही विकास सहायता राशि एवं तकनीकी मदद में तथाकथित कमियों को दूर करने के लिए क्षमता–निर्माण की धारणा पर आधारित विकास दृष्टिकोणों को प्रस्तावित किया गया। इनमें आदाता द्वारा दर्शाई गयी ज़िम्मेदारी की कमी, सतत परिवर्तन को प्रभावित करने की अक्षमता, अंतर–विभागीय समन्वयन की कमी, एवं अपर्याप्त अनुरूप–निर्मित दृष्टिकोण शामिल थे(ईपीआरएस, 2017)। हालांकि, क्षमता विकास ने सहायता राशि, तकनीकी मदद अथवा तकनीकी सहयोग का स्थान नहीं लिया; परंतु अन्य दृष्टिकोणों के साथ साथ इसकी प्रस्तावना विकास की रूपावली में एक परिवर्तन लेकर आई। क्षमता निर्माण उस समय अस्तित्व में आया जब श्रेणीबद्ध भाषा से अलग हटकर 'साझेदारी' एवं 'बातचीत' को बढ़ावा देते हुए, ऊपर से नीचे की ओर वाली विकास रणनीतियों का खंडन किया जा रहा था (लिनेल, 2003)। अतः, जो प्रश्न इसके कारण प्रकाश में आए थे– किन क्षमताओं के बारे में, और किसकी– को वह जो हस्तक्षेप करने का प्रयास करना चाहते थे एवं वह जो इस प्रकार की परियोजनाओं में साझेदारों अथवा सहभागियों के रूप में खड़े थे, उनके बीच एक खुली वार्ता के एक भाग के रूप में कल्पित किया गया। क्षमता निर्माण में की गई पहलों को 'स्थानीय ज़िम्मेदारी' (ऑर्गनाइज़ेशन फॉर इकनॉमिक कोपेरेशन एंड डेव्लपमेंट (ओईसीडी)1966) के साथ-साथ 'किसी व्यक्ति, दल, संस्था अथवा प्रणाली की क्षमता' में 'व्यापक परिवेश में बाहरी कारकों' की भूमिका और बढ़ती हुई पहचान के क्रांतिकारी परिवर्तनों के रूप में देखा

जाने लगा (मिलेन 2001:2)। तत्पश्चात, वर्तमान में अनेक नीति आधारित दस्तावेज़ तीन स्तरों को मान्यता प्रदान करते हैं जिन पर क्षमता विकास संचालित होती हैः सामाजिक, सांस्थानिक एवं व्यक्तिगत। यूएनडीपी के अनुसार इन तीन स्तरों की व्याख्या इस प्रकार है(ईपीआरएस, 2017)।

समर्थकारी परिवेश(enabling environment):'एक व्यापक सामाजिक प्रणाली है जिसमें लोग एवं संस्थाएं काम करते हैं। इसमें वह सभी नियम, कानून, नीतियाँ, शक्ति आधारित संबंध एवं सामाजिक मानदंड शामिल हैं जो नागरिक संलिप्तता को संचालित करते हैं। यह वह समर्थकारी परिवेश है, जो क्षमता विकास की व्यापक संभावना को स्थापित करता है।'

संस्थागत स्तरः 'उन आंतरिक ढांचों, नीतियों एवं प्रक्रियाओं को संदर्भित करता है जो किसी संस्था की प्रभावशीलता को सुनिश्चित करते हैं। इस प्रकार समर्थकारी परिवेश के फ़ायदों को क्रियान्वित किया जाता है तथा व्यक्तियों का एक समूह मिलकर एक साथ आगे आता है। यह तत्त्व जितने अधिक बेहतर ढंग से संसाधित एवं प्रबंधित होंगे, उतनी ही अधिक क्षमता वर्धन की संभावना होगी।'

व्यक्तिगत स्तरः में 'वह कौशल, अनुभव एवं ज्ञान शामिल हैं जो प्रत्येक मनुष्य को अपनी क्रियाओं का निष्पादन करने में समर्थ बनाते हैं। इनमें से कुछ को औपचारिक तरीके से, शिक्षा एवं प्रशिक्षण के माध्यम से, जबकि अन्य को अनौपचारिक काम करने एवं अवलोकन करने के तारीके द्वारा ग्रहण किया जाता है। संसाधनों तक पहुँच एवं अनुभव जो कि किसी व्यक्ति विशेष की क्षमता को विकसित कर सकते हैं, उन्हे अधिकांशतः उन संस्थागत एवं पर्यावरणिक कारकों के माध्यम से आकार प्रदान किया जाता है जिन्हें ऊपर परिभाषित किया गया है, जो इसके प्रतिक्रिया स्वरूप प्रत्येक व्यक्ति विशेष में हुए क्षमता विकास की मात्रा से प्रभावित रहते हैं।

सहायता प्रभावशीलता पर 2005 की पेरिस घोषणा में इस बात पर प्रकाश डाला गया कि क्षमता विकास सहायता प्रभावशीलता के लिए आवश्यक पूर्व शर्तों में से एक हैः 'नीतियों एवं कार्यक्रमों के परिणामों के लिए नियोजन, प्रबंधन, कार्यान्वयन एवं अभिलेख की क्षमता, विकास उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अत्यावश्यक हैं– विश्लेषण एवं वार्तालाप से लेकर कार्यान्वयन, निगरानी एवं मूल्यांकन तक।' अतः क्षमता निर्माण को 'साझेदार देशों की ज़िम्मेदारी' के रूप में देखा जाता है, जबकि प्रदाता इसमें एक सहायक की भूमिका निभाते हैं। यूएनडीपी इस बात को प्रलेखित करता है कि "क्षमता विकास इस सिद्धान्त के साथ शुरू होती है कि लोग अपनी सम्पूर्ण क्षमता का अनुभव करने के लिए सर्वोत्तम ढंग से सशक्त हों, जब विकास के साधन सतत, स्वदेशी, दीर्घकालिक तथा उनके द्वारा सामूहिक रूप से उत्पन्न एवं प्रबंधित हों जो लोग लाभ पाने के लिए एक साथ खड़े होते हैं" (यूएनडीपी, 2009)। 1990 के दशक के मध्य से, सभी बहु–पक्षीय एवं द्विपक्षीय अनुदान संस्थाओं एवं गैर–सरकारी विकास संगठनों ने क्षमता निर्माण को अपनी नीतियों के एक मूल तत्त्व के रूप में अपना लिया था। क्षमता एवं क्षमता विकास द्वारा क्या समझा जाता है, कुछ परिभाषाएँ यहाँ नीचे दी गयी हैंः

संस्था	क्षमता की परिभाषा	क्षमता विकास की परिभाषा
यूएनडीपी	क्रियाओं के निष्पादन, समस्याओं के समाधान करने तथा एक सतत ढंग से	क्षमता विकासः वह प्रक्रिया जिसके माध्यम से व्यक्ति विशेष, संस्थाएं एवं समाज समय के साथ अपने विकास

	उद्देश्यों को स्थापित एवं प्राप्त करने के लिए व्यक्तियों, संस्थानों एवं समाजों की क्षमता।	उद्देश्यों को स्थापित एवं प्राप्त करने के लिए क्षमताओं को निर्मित करते हैं, सशक्त करते हैं एवं बनाए रखते हैं। क्षमता निर्माणः एक प्रक्रिया जो क्षमताओं को निर्मित एवं उत्पन्न करने के केवल आंतरिक स्तरों को सहायता प्रदान करे तथा इस बात को मानकर चले कि वर्तमान परिस्थिति में कोई क्षमताएं विद्यमान नहीं हैं। (यूएनडीपी)
ओईसीडी डीएसी (OECD DAC)	'क्षमता' को सफलतापूर्वक अपने कामकाज करने के लिए लोगों, संस्थाओं एवं समाज के एक समग्र सामर्थ्य के रूप में समझा जाता है। परिभाषा को जानबूझकर सरल रखा गया है। यह उन उद्देश्यों पर किसी प्रकार के पूर्वाग्रह से बचती है, जिनका अनुसरण लोग करने के लिए चुनते हैं, अथवा जिसे उनके सामूहिक प्रयासों के प्रबंधन में एक सफलता के रूप में गिना जाता हो।	क्षमता विकास को एक प्रक्रिया के रूप में समझा जाता है जहां लोग, संस्थाएं एवं समाज एक साथ मिलकर समय के साथ क्षमता की सीमाओं को बढ़ाते हैं, सशक्त करते हैं, उत्पन्न करते हैं, ढालते एवं बनाए रखते हैं। क्षमता विकास वाक्यांश को सोच–समझकर पारंपरिक क्षमता निर्माण के स्थान पर प्राथमिकता के रूप में उपयोग किया जाता है। 'निर्माण' रूपक एक समतल भूमि से शुरू होकर एक पूर्वकल्पित डिज़ाइन के आधार पर कदम–दर–कदम एक नए ढांचे को खड़ा करने की एक प्रक्रिया का सुझाव देता है। अनुभव इस बात का सुझाव देते हैं कि क्षमता इस प्रकार सफलतापूर्वक संवर्धित नहीं होती।
वर्ल्ड बैंक	विकास के लिए क्षमता संसाधनों की उपलब्धता है तथा वह कार्यकुशलता एवं प्रभावशीलता है जिसके साथ समाज उन संसाधनों को एक सतत आधार पर अपने विकास लक्ष्यों की पहचान करने तथा उनका अनुसरण करने के लिए उपयोग करते हैं। (वर्ल्ड बैंक, 2009)	क्षमता विकास (अथवा क्षमता निर्माण) एक स्थानीय ढंग से संचालित अगुवाई करने वालों, गठबंधनों एवं परिवर्तन के अन्य घटकों द्वारा सीखने की एक प्रक्रिया है, जो सामाजिक–राजनैतिक, नीति संबन्धित, एवं सस्थागत कारकों में से किसी विकास लक्ष्य की प्राप्ति के लिए किए गए प्रयासों की प्रभावशीलता एवं कार्यकुशलता के लिए स्थानीय स्वामित्व को संवर्धित करने के लिए परिवर्तन लाती है। (वर्ल्ड बैंक, 2009)
यूएनईसीए		क्षमता विकास एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति विशेष, समूह, संगठन एवं समाज एक समावेशी, सहभागी एवं सतत आधार पर अपने विकास उद्देश्यों को परिभाषित, नियोजित एवं प्राप्त

		करने के लिए क्षमताओं का उपयोग करते हैं, और उन्हें बनाएं रखने के लिए उनके अनुसार ढलते और सशक्त होते हैं।

इस प्रकार वैचारिक रूप से, क्षमता विकास अंतर्जात क्षमताओं को सशक्त बनाने और मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित करता है, जो लोगों, कौशल, प्रौद्योगिकियों, संस्थानों सहित स्थानीय संसाधनों का अधिकतम उपयोग करता है, और स्थायी परिवर्तन के पक्ष में इसका निर्माण करता है। इसने अपना ध्यान 'सर्वोत्तम अभ्यास' तथा विस्तार करने की अवधारणाओं पर भी केन्द्रित किया जो कि एक आकार सभी को फिट बैठता है से लेकर 'सर्वोत्तम फिट' वाले प्रसंग वाली बात में विश्वास रखता था, एक ऐसी नृवंशीय वास्तविकता जिसके लिए मानव विज्ञानी सदैव से पैरवी करते आए हैं। संस्कृति, प्रसंग, क्षमता एवं परिवर्तन के बीच का संबंध बहुत ही जटिल है, जिसमें क्षमता एवं परिवर्तन प्रसंग में ही अंतर्निहित हैं जबकि इसके साथ यह प्रसंग ही है जो परिवर्तन हेतु संभावित उत्तोलक प्रदान करता है। प्रसंग स्वयं अतिक्रमण करता भी है तथा साथ ही यह एक क्षमता विकास प्रक्रिया द्वारा प्रभावित भी होता है (ईपीआरएस, 2017)। अगले भाग में हम क्षमता विकास के संदर्भ में इस प्रकार की कुछ जटिलताओं की खोज करेंगे।

अपनी प्रगति जांचें

1) क्षमता निर्माण एवं क्षमता विकास के बीच क्या संबंध है?

....

....

....

....

....

2) क्षमता विकास की समाजशास्त्रीय/मानवशास्त्रीय समझ गैर–मानवशास्त्रीय विकास व्यवसायियों की तुलना में किस प्रकार भिन्न है?

....

....

....

....

....

3) विकास के विमर्श में 'क्षमता निर्माण' का उदय कब और क्यों हुआ?

....

....

....

....

4) सहायता राशि प्रभावशीलता पर 2005 पेरिस घोषणा ने सहायता राशि प्रभावशीलता के लिए एक अनिवार्य पूर्वस्थिति पर क्या प्रकाश डाला?

....

....

....

....

....

12.2 क्षमता विकास की जटिलताएँ

मानव विज्ञान की शक्ति नृवंशीय शोधकार्य के माध्यम से कार्यस्थल–संबन्धित स्थितियों को उजागर करने की क्षमता विश्लेषकों में रही है (कैस्ट्रो एंड ब्रोकेनशा, 2015:302)। आदर्श रूप में, क्षमता विकास के साथ मानव वैज्ञानिक संलिप्तता को अमीर एवं गरीब, मुख्यधारा एवं हाशिये पर रहने वालों (देश, समूह एवं व्यक्ति विशेष), के बीच शक्ति असमानता के मुद्दों से निपटने के लिए नीति एवं सांस्थानिक सुधारों के द्वारा गहन, और दीर्घकालिक परिवर्तनों पर बल देते हुए एक समावेशी दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। जबकि क्षमता विकास, विकास विमर्श में विकास कार्यक्रमों में सहभागिता एवं स्वामीत्व की स्थापना तथा परिणामस्वरूप नीति पर पड़ने वाले इसके प्रभाव के विषय में किसी स्मारकीय परिवर्तन की बात नहीं करता है, हालांकि यह प्रदाता–प्राप्तकर्ता के बीच शक्ति विभाजन को दूर नहीं कर सकता है। यह एक पहेली ही बनी रहती है कि क्षमता विकास की अवधारणा विकास पर व्यापक समग्र कल्पना के दायरे में ही रहती है। वैश्विक स्तर पर दाता लाभार्थी के एक विभाजित हुए हिस्से को इस संकल्पना द्वारा संबोधित किया गया है कि "विकास" विरुद्ध "विकसित" वाले विरोधाभास को दूर रखते हुए सतत विकास लक्ष्य (एसजीडी) समान रूप से विश्व के सभी देशों पर लागू होते हैं। जबकि, पहले क्षमता विकास को इस रूप में देखा जाता था कि विकासशील देशों में विकसित देशों द्वारा हितधारकों के रूप में उनकी पहचान के लिए इसकी आवश्यकता थी, एसजीडी क्षमता विकास की वैश्विक मांग को प्रतिबिम्बित करते हैं। हालांकि, प्रदाता– लाभार्थी विरोधाभास एवं शक्ति गतिकी वैश्विक एवं स्थानीय विभिन्न सापेक्षिक स्तरों पर संचालित होते हैं तथा विभिन्न कारकों के कारण प्रभावित होते हैं जो क्षमता विकास को पीछे कर सकते हैं।

मानव विज्ञानी स्वयं विकास की संकल्पना में अपनी संलिप्तता के बारे में विभिन्न वैचारिक स्थान रखते हैं। "अर्टूरो एस्कोबार (1995) ने संभाषण (विमर्श) विश्लेषण को प्रकाशित करने के लिए एक बातचीत एवं सांस्थानिक अभ्यासों के रूप में उपयोग किया जो, तीसरी दुनिया के प्रभुत्त्व को स्थिर बनाए रखते हैं। उसने तर्क दिया कि मानव विज्ञानियों को विकास संस्थाओं के साथ संलिप्त नहीं होना चाहिए। इसके विपरीत, केटी गार्डनर एवं डेविड लूइस (1996) ने विकास जगत की अनेक विवेचनाओं के प्रति सहमति प्रकट की, परंतु एक भिन्न नतीजे पर पहुंचेः इस बात को विवाद में लाते हुए कि संभाषण विश्लेषण की अंतर्दृष्टि नृवंशीय शोधकार्य के साथ मिलकर, प्रभावशाली सहभागिता आधारित प्रयासों को समर्थन देते हुए नवीन संभावनाएं प्रदान करती है। गार्डनर एवं लूइस ने इस बात का आभास किया कि विशेषकर वैश्विक 'दक्षिण' से मानव विज्ञानियों की संलिप्तता ने परिवर्तन के प्रति आविष्कारी संभावनाएं

प्रदान की हैं। कुछ देशों में, जैसे कि मेक्सिको में, विकास के मुद्दों में, भले ही विवादास्पद, मानव विज्ञान की एक लंबी संलिप्तता रही है (नहमद सिट्टों, 2011)। अन्य देश अभी मानव विज्ञान में अपनी क्षमता निर्माण करने में सापेक्षीय रूप से एक प्रारम्भिक अवस्था में हैं, जबकि व्यावहारिक मुद्दे अभी भी बहुत असपष्ट ही दिखाई पड़ते हैं (हिल एवं बाबा, 2006)"। (कैस्ट्रो एवं ब्रोकेनशा, 2015:302)।

मानव विज्ञानी बढ़ते क्रम में अपने द्वारा किए गए काम को, उस आबादी के साथ साथ जिसका वह अध्ययन कर रहे हैं, एक व्यापक स्तर पर जनता के लिए 'प्रासंगिक' बनाने की अपेक्षा रखते हैं (लो एवं मेरी, 2010), हालांकि, जैसा कि पहले भाग में उल्लेख किया जा चुका है, इस बात में मतभेद हैं कि कैसे मानव विज्ञानी एवं समाजशास्त्री क्षमता निर्माण को एक परिवर्तन के रूप में देखते हैं, जो कि एक प्रवाही एवं गतिशील चरित्र है तथा परिवर्तन की प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले कारकों की बहुलता भी है। हालांकि क्षमता विकास पर औपचारिक विमर्श मापने योग्य परिणाम वाले संकेतकों के माध्यम से कदम दर कदम तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान करता है, ऐसा होना क्षमता विकास की अवधारणा में एक द्वंद्व उत्पन्न करता है। द्वंद्वता इस बात से उत्पन्न होती है कि क्षमता निर्माण को एक दृष्टिकोण एवं एक उद्देश्य, दोनों ही रूप में, किसी लक्ष्य की ओर पद्धतियों के समुच्च्य के रूप में, तथा अपने आप में एक मापने योग्य परिणाम के रूप में कार्यान्वित किया जा सकता है (बोलगेर 2000:1)। एक माध्यम एवं लक्ष्य के रूप में, क्षमता निर्माण जो लक्षित करती है, वह 'सामर्थ्यों' से लेकर 'समझ, व्यवहारों, मूल्यों, सम्बन्धों, आचरणों, प्रेरणाओं, संसाधनों एवं स्थितियों तक कुछ भी हो सकता है' (बोलगेर 2000:2)। इसके अतिरिक्त, क्षमता निर्माण जो कि सामग्री आधारित कलाकृतियों– शौचालय एवं बुनाई घर– में परिमापन योग्य गुणकारिता की पहचान करता है, परंतु तुलनात्मक रूप से कम दृश्य क्षमताओं की ओर उन्मुख होता है जैसे कि 'ज्ञान'। उदाहरण के लिए, 1990 के दशक में क्षमता निर्माण का 'सर्पिल' नमूना, जो यह मानता है कि "प्रत्येक नए शौचालय, बुनाईघर अथवा किसी गाँव में सिंचाई नहर के पीछे का ज्ञान। उदाहरण के लिए, व्यक्ति विशेषों एवं सामूहिक ज्ञान, व्यवहारों एवं कौशल में कम दृश्य परंतु समान रूप से महत्त्वपूर्ण परिवर्तन होते हैं"। (रॉबिंसन एवं कॉक्स 1998:127) "हम क्षमताओं को 'स्तरों' एवं 'प्रकरों' के आधार पर संयोजित पाते हैं, जो 'क्रियाशील एवं तकनीकी' (यूएनडीपी, 2009), 'कोमल' तत्त्वों (प्रेरणादायक एवं प्रक्रिया) एवं 'ठोस' तत्त्वों (तकनीकी) में बंटे हुए होते हैं (लेंड, 1999)। क्षमताओं को परिभाषित करने से लेकर उनका निर्माण करने तक, व्यवसायी प्रणेता सफलता प्राप्त करने के लिए आंतरिक हितधारकों की संलिप्तता से लेकर परियोजना के मूल्यांकन की समाप्ति तक के लिए कुछ प्रमुख कदमों को अपनाने का सुझाव देते हैं। इस कारण, ओक्स्फ़ेम के क्रिस रोच क्षमता निर्माण को एक ऐसी संकल्पना के रूप में स्थापित करते हैं जिसकी जांच पड़ताल अभी होनी है (रोच, 1997: v), किसी लक्ष्य के विरुद्ध जिसका परिमापन होना है, नीति उन्मुखीकरण के साथ एक संरेखण अंकित करते हुए जहां क्षमताओं का 'मूल्यांकन उनके विकास उद्देश्य के संबंध में अधिक उपयोगी ढंग से होता है' (मालिक 2002, 27)। 'कौन सी क्षमताएं' वाले प्रश्न अंततः कौन सा क्षमता निर्माण 'किसके लिए' वाले असहमति के नवीन समुच्च्यों को खोलते हुए 'कौन से छोर' वाले प्रसंग में परिणत हो जाते हैं (डगलस–जोंस एवं शेफनर, 2017:4)। विभिन्न आयामों, विभिन्न स्तरों एवं विभिन्न घटकों का संयोजन क्षमता निर्माण के लिए समग्र अधिदेश के साथ संभावनाओं में और विस्तार करता है, जो कि अपनी अस्पष्टता के कारण विकास विमर्श में आलोचना का

केंद्र रहाः यह 'भ्रामक'(कपलन 2000:517), 'अनेकार्थी' (ब्लॅक 2003:116), 'लोचदार' (ल्लुस्थौस एवं अन्य 1999:3) है अथवा और भी बुरी 'सहायक शब्दजाल का एक मैला–कुचैला टुकड़ा' है (ईएड 2010:204)।

इस प्रकार, क्षमता विकास में कई गुना जटिलताएँ हैं। अपनी सहभागिता आधारित साझेदार दृष्टिकोण के बावजूद, प्रदाता–लाभार्थी विरोधाभास बना रहता है तथा क्षमता विकास की संभावना को प्रभावित कर सकता है। इसके अतिरिक्त, परिवर्तन की प्रवाहशीलता कदम दर कदम ढांचागत प्रगति क्षमता निर्माण में एक दृष्टिकोण अथवा एक उद्देश्य द्वारा संचालित परिमापन योग्य परिणाम सूचक होने के कारण द्वंद्वता को आगे लेकर आती है, तथा उस प्रक्रिया के बारे में विषय आधारित समझ (मानव विज्ञानी विरुद्ध अन्य विकास व्यवसायी) बनाने में एक प्रकार की असहमति को आगे लेकर आती है। इसके अतिरिक्त, क्षमता निर्माण की व्यापकता आधारित बहुआयामी एवं बहुस्तरीय अवधारणा में लचीलापन होने के कारण विकास विमर्श में ही इसकी आलोचना होती है। जबकि, क्षमता निर्माण का 'सर्पिल' नमूना क्षमता निर्माण को प्रकाश में लेकर आता है जो कि सामग्री आधारित कलाकृतियों में परिमापन योग्य गुण–कारिता को रखांकित करने के साथ–साथ ज्ञान एवं कौशल के रूप में अप्रकट क्षमता के विकास को भी लेकर आता है।

अपनी प्रगति जांचें

5) क्षमता निर्माण का 'सर्पिल' नमूना किस बात की कल्पना करता है?

....

....

....

....

....

6) क्षमता विकास में मानवविज्ञान कैसे भूमिका निभा सकता है?

....

....

....

....

....

12.3 सारांश

क्षमता विकास का सार वह परिवर्तन उत्पन्न करने में है जो सभी हस्तक्षेपों के स्थानीय स्वामित्व के माध्यम से अंदर से समय के साथ सतत हो, जहां स्थानीय समूह क्षमता विकास की आवश्यकताओं एवं लक्ष्यों का निर्धारण करते हैं, अपने लिए नेतृत्त्व की कल्पना करते हैं तथा परिवर्तन की प्रक्रिया का डिज़ाइन तैयार करते हैं। इसके बहु–आयामी, बहु–स्तरीय एवं विभिन्न घटकों के रूप में क्षमता विकास की जटिलता के कारण इसके बारे में समझ बनाने के लिए एक बहु–विषयी दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है, जहां मानव विज्ञान की एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका बनती है। यह

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

विशेषतः सत्य है, चूंकि मानव वैज्ञानिकों ने बहुधा प्राथमिकताओं में तालमेल बैठाने में सहभागिता एवं समुदाय आधारित केन्द्रों के माध्यम से परिवर्तन के विभिन्न हितधारकों के बीच एक समन्वयक की भूमिका निभाई है, तथा नेतृत्त्व एवं स्वामीत्त्व की ओर से समुदायिक संघटन में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। नृवंशीय शोधकार्य के माध्यम से प्राप्त हुआ नृवंशीय ज्ञान भी अमूर्त क्षमता विकास के बारे में समझ बनाने में सहायक होता है जिसका मूल्यांकन मानक निगरानी एवं मूल्यांकन संकेतकों के माध्यम से नहीं किया जा सकता। इसके अतिरिक्त, क्षमता विकास के संबंध में नीति एवं प्रक्रिया दोनों पर मानव वैज्ञानिक ज्ञान एवं अनुभव के अत्यावश्यक प्रतिबिंब, प्रभावशाली नीति एवं कार्यक्रम आधारित ढाँचे उत्पन्न करने में योगदान कर सकते हैं।

12.4 संदर्भ

Black, L. 2003. “Critical Review of the Capacity Building Literature and Discourse”.*Development in Practice.* 13 (1): 116-120.

Bolger, J. (2000). “Capacity Development: Why, What and How”.*Canadian International Development Agency (CIDA) Policy Branch Capacity Development Occasional Series.* 1 (1): 1-8.

Castro, P. and D.W. Brokensha. (2015). “Development: Social-Anthropological Aspects”. in James D. Wright (ed) *International Encyclopedia of the Social & Behavioral Sciences*, 2nd edition, Vol 6. Oxford: Elsevier. 301-306.

Danaher, P et al. (eds). (2012). *Constructing Capacities: Building Capabilities through Learning and Engagement*. Newcastle upon Tyne: Cambridge Scholars Publishing.

Douglas-Jones, R. and J. Shaffner.(2017). “Capacity Building in Ethnographic Comparison”.*The Cambridge Journal of Anthropology*. 35 (1): 1-16. doi:10.3167/cja.2017.350102.

Eade, D. (1997). *Capacity Building: An Approach to People-Centered Development*. London: Oxfam.

Eade, D. (2010). “Capacity Building: Who Builds Whose Capacity?”.in A. Cornwall and D. Eade (eds), *Deconstructing Development Discourse: Buzzwords and Fuzzwords*. Rugby, UK: Practical Action, 203-215.

EPRS. (2017). *Understanding capacity-building/ capacity development A core concept of developmentpolicy*.https://www.europarl.europa.eu/thinktank/en/document.html?reference=EPRS_BRI(2017)599411#:~:text=While%20'capacity%2Dbuilding'%20suggests,change%2C%20borne%20by%20local%20actors. (visited on 26.07.2020, 22:43)

Escobar, A. (1995). Encountering *Development: The Making and Unmaking of the Third World*. Princeton: Princeton University Press.

Fuduka-Parr, S., Lopes, C. and K. Malik. (2002). *Capacity for Development: New Solutions to Old Problems*. London: Earthscan.

Gardner, K. and D. Lewis.(1996). *Anthropology, Development and the Post-modern Challenge*. London: Pluto Press.

Geissler, P. W. et al. (2014). *Convenors of Making Scientific Capacity in Africa: An Interdisciplinary Conversation*. Cambridge: Centre for Research in the Arts, Social Sciences and Humanities. 13-14.

Hoben, A. (1982). *Anthropologists and development.Annual Review of Anthropology.* 11: 349-375.

Hughes, B., Hunt, C. and B. Kondoch. (2010). *Making Sense of Peace and Capacity-Building Operations: Rethinking Policing and Beyond*. Leiden: Martinus Nijhoff Publishers.

Kaplan, A. (2000). "Capacity Building: Shifting the Paradigms of Practice". *Development in Practice*. 10 (3-4): 517-526.

Kelly, J. (2011). *State Healthcare and Yanomami Transformations: A Symmetrical Ethnography*. Tucson: The University of Arizona Press.

Land, T. (1999). "Conceptual and Operational Issues Arising: Overview Paper". *Paper prepared for the Joint DAC Informal Network/ACBF Workshop on Institutional and Capacity Development, Harare.*

Linnell, D. (ed.). (2003). *Evaluation of Capacity Building: Lessons from the Field*. New York: Alliance for Non-profit Management.

Low, S.M. and S. E. Merry. (2010). "Engaged anthropology: diversity and dilemmas". *Current Anthropology* . 51 (Suppl.): S203-S224.

Lusthaus, C., Adrien, M. H and M. Perstinger. (1999). "Capacity Development: Definitions, Issues and Implications for Planning, Monitoring and Evaluation". *Universalia Occasional Paper 35.*

Malik, K. (2002). "Towards a Normative Framework: Technical Cooperation, Capacities and Development". in S. Fukuda-Parr, C. Lopes and K. Malik (eds), *Capacity for Development: New Solutions to Old Problems*. London: Earthscan Publications.

Milèn, A. (2001). *What Do We Know about Capacity Building? An Overview of Existing Knowledge and Good Practice*. Geneva: Department of Health Service Provision, World Health Organization (WHO).

OECD. (1996). *Shaping the 21st Century: The Contribution of Development Co- operation*. Paris : OECD.

O'Reilly, K. (2011). "Building Capacity, Extracting Labour: The Management of Emotion in NGOs". *paper presented at 'Traces, Tidemarks and Legacies', 110th annual meeting of the American Anthropological Association, Montreal, 16-20 November.*

Pfotenhauer, S., Roos, D. and D. Newman. (2013). "Collaborative Strategies for Innovation Capacity-Building: A Study of MIT's International Partnerships". in P. Teirlinck, F. de Beule and S. Kelchtermans (eds), *Proceedings of the 8th European Conference on Innovation and Entrepreneurship*. Brussels: Belgium. 498–506.

Pfotenhauer, S., Wood, D., Roos, D. and D. Newman. (2016). "Architecting Complex International Science, Technology and Innovation Partnerships (CISTIPs): A Study of Four Global MIT Collaborations". *Technological Forecasting and Social Change.* 104: 38-56. doi:0.1016/j. techfore.2015.12.006.

Robinson, S. A. and P. Cox. (1998). "Participatory Evaluation in Human Resource Development: A Case Study for Southeast Asia". in E. T. Jackson and Y. Kassam (eds), *Knowledge Shared: Participatory Evaluation in Development Cooperation*. West Hartford, CT: Kumarian Press. 122-150.

Roche, C. (1997). "Preface".in D. Eade (ed.), *Capacity Building: An Approach to People-Centered Development*. London: Oxfam. v–vi.

Sittón, S. N. (2011). "The role of anthropology with the changes and challenges of the 21st century in Mexico and the world".*Human Organization.*70.

Taussig, K.-S., Hoeyer, K. and S. Helmreich. (2013). "The Anthropology of Potentiality in Biomedicine: An Introduction to Supplement 7". *Current Anthropology*. 54 (S7): S3-S14.

(UNDP (United Nations Development Programme).(1998). "Capacity Assessment and Development in a Systems and Strategic Management Context".*MDGB Technical Advisory Paper 3.*

UNDP (United Nations Development Programme). (2003). *Ownership, Leadership and Transformation: Can We Do Better for Capacity Development?*. London: Earthscan Publications.

UNDP (United Nations Development Programme). (2009). *Capacity Development: A UNDP Primer*. New York: United Nations Development Programme.

UNEP (United Nations Environmental Programme). (2002). *Capacity Building for Sustainable Development: An Overview of UNEP Environmental*

Capacity Development Activities. New York: United Nations Environmental Programme

Yunus, M., (2007).*Creating a World without Poverty*. New York: Public Affairs.

12.5 आपकी प्रगति की जाँच के लिए उत्तर

1. अनुभाग 12.0 देखें।
2. अनुभाग 12.1 देखें।
3. अनुभाग 12.1 का पैराग्राफ 4 देखें।
4. अनुभाग 12.1 का पैराग्राफ 5 देखें।
5. अनुभाग 12.2 का पैराग्राफ 4 देखें।
6. अनुभाग 12.0 का पैराग्राफ 1 देखें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 13 सिविल सोसायटी और राज्य में भागीदारी*

इकाई की रूपरेखा

13.0 परिचय
13.1 सिविल सोसायटी और राज्य
13.2 राज्य क्या है?
13.3 मानवविज्ञान का क्षेत्र
13.4 मानवविज्ञानी और गैर सरकारी संगठन
13.5 मानवविज्ञानियों की उभरती भूमिकाएँ
13.6 सारांश
13.7 संदर्भ
13.8 आपकी प्रगति की जाँच के लिए उत्तर

अधिगम के परिणाम

इस इकाई को पढ़ने के बाद शिक्षार्थी सक्षम होंगे :

- नागरिक समाज और राज्य की अवधारणा का वर्णन करने में;
- इसकी पहचान करने में कि मानवविज्ञानियों ने किस प्रकार विकास और नीति निर्माण में योगदान दिया है; तथा
- नागरिक समाज और राज्य में भागीदारी के लिए मानवविज्ञान की भूमिका और प्रासंगिकता को समझने में।

13.0 परिचय

विद्यार्थियो के लिए यह जानना दिलचस्प होगा कि नागरिक समाज और राज्य में मानवविज्ञानियों की भागीदारी समय के साथ विकसित हुई है। अमेरिकन एंथ्रोपोलॉजिकल एसोसिएशन (2019) के अनुसार "आज के मानवविज्ञानी केवल विदेशी (अनोखे) स्थानों में काम नहीं करते हैं। मानव विज्ञानी निगमों, सभी स्तरों के सरकारी संस्थानों, शैक्षणिक संस्थानों और गैर–लाभकारी संगठनों (नागरिक समाज संगठनों) में भी कार्यरत हैं।" औपनिवेशिक शासन के समय, मानव विज्ञान के उपयोग के सबसे प्रसिद्ध शुरुआती पैरवीकार रेडक्लिफ–ब्राउन थे। केपटाउन विश्वविद्यालय में उनके स्कूल ऑफ अफ्रीकन स्टडीज को श्वेत और अश्वेत आबादी के बीच संघर्ष को कम करने के लिए विकसित किया गया था। इसी तरह, मार्गरेट मीड और और रूथ बेनेडिक्ट के जापानी अमेरिकियों पर किए मानवशास्त्रीय अध्ययन का प्रयोग संयुक्त राज्य अमेरिका सरकार ने जापान के विरुद्ध प्रभावी ढंग से किया (ओ ड्रिसकोल 2009)। सांस्कृतिक अध्ययन करने के लिए भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण (संस्कृति मंत्रालय के अधीन) की स्थापना 1945 में मानवजीवन के सांस्कृतिक और भौतिक पहलुओ के अध्ययन हेतु की गई थी। संस्कृति मंत्रालय के अनुसार मानव विज्ञान,

* योगदानकर्ता : प्रो. अवनीश कुमार, लोक नीति और शासन, प्रबंधन विकास संस्थान, गुरूग्राम, हरियाणा।

जैसा भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण के उपयोग में है ,"सच्चे अर्थो मे समष्टि भाव के साथ विशिष्ट है"।

सामाजिक मानवविज्ञानी ज्ञान, सामाजिक और स्थानिक बहिष्कार के मुद्दों, विशेष रूप से जनजातियों, जैसे हाशिए के समुदायों के मुद्दों को संबोधित करने में महत्वपूर्ण माना जाता है। भारत सरकार ने अपने राज्यों में कई जनजातीय अनुसंधान संस्थान (टीआरआई) स्थापित किए हैं। वर्तमान में जनजातीय अनुसंधान संस्थान (टीआरआई) 24 राज्यों और 1 केंद्र शासित प्रदेश में काम कर रहे हैं। टीआरआई की मूल जिम्मेदारी आदिवासी विकास और आदिवासी सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के लिए थिंक टैंक के रूप में ज्ञान और अनुसंधान के एक निकाय के रूप में कार्य करना है। वर्ष 2017–18 और 2018–19 (MoTA, भारत सरकार 2019) के दौरान अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, सिक्किम और मिज़ोरम राज्यों से प्राप्त प्रस्तावों के आधार पर नए जनजातीय अनुसंधान संस्थानों (टीआरआई) की स्थापना के लिए धन उपलब्ध कराया गया है। 1955 की शुरुआत में द्वितीय पंचवर्षीय योजना में 43 विशेष बहुउद्देशीय जनजातीय ब्लॉक (एसएमपीटीबी) को लक्षित हस्तक्षेपों के लिए पहचाना गया जिन्हें बाद में जनजातीय विकास खंड (टीडीबी) कहा गया। 1959 में नए हस्तक्षेपों की समीक्षा करने और इससे संबन्धित सिफारिश करने के लिए उस समय के प्रसिद्ध मानववैज्ञानिक वेरियर एल्विन की अध्यक्षता में एक समिति की स्थापना की गई थी ।

अतः हम पाते हैं कि राज्य योजना और प्रशासन के लिए मानवशास्त्रीय ज्ञान और इसकी प्रासंगिकता की भूमिका 1807 से ही है। साक्ष्य बताते हैं कि मानवविज्ञान हैलबरी महाविद्यालय में पढ़े जाने वाले विषयों में से एक था जहां ब्रिटिश लोक सेवकों को भारत में सेवा करने के लिए जाने से पूर्व ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा प्रशिक्षित किया जाता था। समय और फिर मानव समाज के प्रति सामाजिक, भौतिक और पुरातात्विक ज्ञान के साथ मानवविज्ञानी को राज्य और समाज के बीच की खाई को कम करके समावेशी विकास और सुशासन को बढ़ावा देने के लिए एक नीति और अभ्यास विकल्प के रूप में माना जाता है।

एंथोनी गिडेंस के अनुसार 'आज का मुद्दा अधिक या कम शासन नहीं है, वरन यह स्वीकार करते हुए कि शासन को वैश्विक युग की नई परिस्थितियों में समायोजित करना चाहिए और उस अधिकार को जिसमें, राज्य वैधानिकता भी शामिल है, को एक सक्रिय आधार पर नवीनीकृत किया जाना है (1999:72)। 1980 के दशक में शासन का यह प्रतिमान विशेष रूप से "सत्ता–लोलुप राज्य और लाभ–संचालित बाजार" (चंडोक, 2009) के बीच मध्यस्थता करने के लिए नागरिक समाज के पुनर्खोज और अनुसंधान के समान था, और इसमे मानव विज्ञान और मानवविज्ञानी की सशक्त भूमिका है।

अपनी प्रगति जांचें

1) मानव विज्ञानी की भूमिकाएँ क्या हैं?

....

....

....

....

....

2) राज्य के लिए मानवशास्त्रीय ज्ञान की भूमिका और प्रासंगिकता बताऐं?

....

....

....

....

....

3) क्या नीति निर्माण में मानवशास्त्रियों ने कोई भूमिका निभाई है?

....

....

....

....

13.1 सिविल सोसायटी और राज्य

लोकतंत्र में कल्याणकारी राज्य के दो उद्देश्य होते हैं –(1) एक समान समाज बनाने के लिए और (2) जीवन चक्र में व्यक्तियों की रक्षा के लिए। नागरिक समाज की उपस्थिति सामाजिक–आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विकास की ओर अग्रसर करती है और इसीलिए दिन–प्रतिदिन इसकी प्रासंगिकता बढ़ती जा रही है। नागरिक समाज लोकतांत्रिक सिद्धांतों और परंपराओं का पालन करता है और इसे "सामाजिक एकजुटता का एक स्व–उत्पादक तंत्र" के रूप में जाना जाता है" (गिडेंस, 1999)।

नागरिक समाज (सिविल सोसायटी) एक संबंधपरक निर्माण है, इसे परिवार, व्यवसाय और राज्य के संबंध में परिभाषित किया गया है। नागरिक समाज के शास्त्रीय सिद्धांत इसे परिवार और राज्य से अलग स्वैच्छिक संघ के रूप में संदर्भित करते हैं। वैश्वीकरण और उदारीकरण के बाद, व्यापार और समाज इंटरफेस के उदय के साथ समकालीन सिद्धांतों ने नागरिक समाज को व्यवसाय से अलग स्वैच्छिक संघ के रूप में भी प्रवेश दिया। इसलिए स्वैच्छिक संघ अलग अथवा परिवार, व्यवसाय और राज्य के बाहर नागरिक समाज के रूप में वर्गीकृत किए जा सकते हैं। पॉलिटिकल थ्योरी की ऑक्सफोर्ड हैंडबुक के अनुसार "राज्य के साथ संघों के प्रकार नागरिक समाज की विशिष्ट समझ को दर्शाते हैं" (चेम्बर्स एंड कोपस्टीन 2006)। संबंध या संघ के प्रकार के आधार पर, नागरिक समाज पर समकालीन बहस को चार व्यापक श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है :

1) **राज्य के अलावा सिविल सोसाइटी:** यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें व्यक्ति एक साथ आते हैं और समूह बनाते हैं, सामान्य उद्यमों का पालन करते हैं, हितों को साझा करते हैं, महत्वपूर्ण और कभी–कभी कुछ कम महत्वपूर्ण मुद्दों पर संवाद करते है। उदाहरणार्थ मंदिर, मस्जिद, चर्च, गेंदबाजी लीग, सेवा संघ, शतरंज क्लब, आदि नागरिक समाज का हिस्सा हैं। स्थानीय महिलाओं के एक स्वैच्छिक संगठन के रूप में स्व-सहायता समूह (SHG) परिवार और राज्य के बाहर सामान्य हितों को पूरा करने के लिए इस श्रेणी के सबसे सामान्य रूपों में से एक है।

2) **राज्य के खिलाफ सिविल सोसाइटीः** इस भूमिका में नागरिक समाज राज्य से अलग नहीं है, यह एक एजेंट के रूप में देखा जा सकता है जो राज्य के साथ बातचीत करते हुए वास्तव में विरोध करते हैं। अन्ना हजारे के नेतृत्व में 2011 में भारतीय भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन सरकार द्वारा कथित भ्रष्टाचार के खिलाफ मजबूत कानून और प्रवर्तन की स्थापना के लिए भारत भर से स्वैच्छिक रूप से एक साथ आने वाले लोगों का एक संगठन था । जयप्रकाश नारायण, जिन्हें जेपी के रूप में जाना जाता है और जो लोकनायक (पीपुल्स हीरो) के रूप में भी लोकप्रिय हैं, को उन लोगों, विशेषकर युवाओं के आंदोलन के प्रतीक के रूप में श्रेय दिया जाता है, जो तत्कालीन प्रधानमंत्री द्वारा 25 जून 1975 को भारत में लगाए गए आपातकालीन शासन की स्थिति का विरोध करने के लिए उठे थे। इन दोनों मामलों के परिणामस्वरूप नई सरकार का गठन हुआ। 2013 में आम आदमी पार्टी ने अन्ना हजारे आंदोलन के बाद दिल्ली में सरकार बनाई और 1977 में राष्ट्रीय स्तर पर जनता पार्टी की सरकार बनी। हालांकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि इन समूहों के सरकारी निकायों में तब्दील होने के बाद दोनों में से कोई भी सिविल सोसाइटी के रूप में नहीं बचे।

3) **राज्य के साथ समर्थन या साझेदारी में सिविल सोसायटीः** 1970 के दशक ने सार्वजनिक सेवाओं के वितरण के लिए सरकार के विस्तार के रूप में काम करने के लिए नागरिक समाज के संगठन को जन्म दिया। इस समूह को *गैर–सरकारी संगठन* (NGO) या *गैर–लाभकारी संगठन* (NPO) भी कहा जाता है। हालांकि ये एनजीओ स्वैच्छिक संघ हैं जो सरकार के लिए काम करते हैं किन्तु वे सरकार का हिस्सा नहीं हैं। भारत मे पहली बार सातवीं पंचवर्षीय योजना (1985–90) और बाद में फिर आठवीं पंचवर्षीय योजना (1992–97) में सरकार ने राज्य और समाज के बीच की खाई को पाटने के लिए सेतु के रूप में एनजीओ की भागीदारी को प्रोत्साहित किया था।

4) **राज्य के साथ बातचीत में सिविल सोसायटीः** यह वह स्थान है जहां नागरिक समाज के भीतर विचारों, हितों, मूल्यों और विचारधाराओं को आवाज देते हुये उन्हें सरकारी नीतियों या कार्यक्रमों को प्रभावित करने योग्य बनाया जाता है। ऐसा ही एक उदाहरण थिंक टैंक का है। पेंसिल्वेनिया विश्वविद्यालय के थिंक टैंक और सिविल सोसाइटीज प्रोग्राम द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार ब्रुकिंग्स इंस्टीटयूशन को दुनिया में शीर्ष थिंक टैंक के रूप में स्थान दिया गया था। पांच भारतीय थिंक टैंकों को दुनिया भर के शीर्ष 150 थिंक टैंक की सूची में शामिल किया है। रिपोर्ट के अनुसार कुल मिलाकर भारत में 509 थिंक टैंक हैं जो संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद, दूसरा सबसे बड़ा है। दुनिया भर के शीर्ष थिंक टैंकों में से इंस्टीटयूट फॉर डिफेंस स्टडीज एंड एनालिसिस (IDSA) की रैंक 42 है, सेंटर फॉर सिविल सोसाइटी (CCS) की 83 रैंक हैं। उसके बाद द एनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टीटयूट (TERI) 111 वें स्थान पर है, ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन रिसर्च (ORF) 118 वें स्थान पर, विकास विकल्प (DA) 140 पर और सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च (CPR) 176 वें स्थान पर (मैकगैन 2019, 58–63)।

वैश्वीकरण और उदारीकरण के उदय के साथ नागरिक समाज के लिए एक और महत्वपूर्ण स्थान खुला है, इसे सामाजिक अर्थव्यवस्था कहा जाता है। सामाजिक अर्थव्यवस्था से तात्पर्य अर्थव्यवस्था के उस भाग से है जो न तो निजी है और न ही

सार्वजनिक है, लेकिन इसमें स्वैच्छिक सदस्य हैं। स्थानीय समुदायों और हाशिए के समूहों की अधिक से अधिक गतिविधियों के लिए संवैधानिक संगठन हैं, जिनमें से एक संभावित अधिशेष का उपयोग समुदाय सदस्य या समाज के अच्छे के लिए किया जाता है। इसे एक सामाजिक उद्यम भी कहा जाता है। इसमें मुख्य रूप से सामाजिक उद्देश्यों के साथ सामाजिक उद्यमी या सामाजिक व्यवसाय शामिल हैं जहां व्यवसाय में या समुदाय में उस उद्देश्य के लिए अधिभार को मुख्य रूप से पुनर्निवेशित किया जाता है (लेन, 2014)। यह लाभ के हिस्से के साथ सामाजिक उद्देश्य प्रदान करता है। सामाजिक व्यवसाय के कुछ उदाहरण ग्रेमेन फाउंडेशन और सेवा (SEWA) हैं, जिन्हें सामाजिक उद्यम भी कहा जाता है।

अपनी प्रगति जांचें

4) लोकतंत्र में कल्याणकारी राज्य के दो उद्देश्य क्या हैं?

....

....

....

....

....

5) नागरिक समाज (सिविल सोसाइटी) को परिभाषित करें ।

....

....

....

....

....

6) राज्य के संबंध में नागरिक समाज की व्यापक श्रेणियों की व्याख्या करें।

....

....

....

....

....

7) सामाजिक उद्यमी कौन हैं?

....

....

....

....

....

13.2 राज्य क्या है?

नागरिक समाज और राज्य के बीच अंतर करने के लिए देश, राष्ट्र और राज्य के बीच के अंतर को समझना महत्वपूर्ण है। एक देश और राज्य समानार्थक शब्द हैं जहां दोनों स्व–शासित राजनीतिक संस्थाओं पर लागू होते हैं। एक राष्ट्र, हालांकि एक ही संस्कृति को साझा करने वाले लोगों का एक समूह है जिनके पास संप्रभुता नहीं भी हो सकती है। राज्य व्यक्तियों का एक समुदाय है जो स्थायी रूप से क्षेत्र के एक निश्चित हिस्से पर निवास कर रहा है, उनकी अपनी सरकार है जिसमें निवासी राज्य के प्रति स्वयं की आज्ञाकारिता घोषित करते हैं और बाहरी नियंत्रण से स्वतंत्रता का आनंद लेते हैं। राज्य किसी क्षेत्र पर तीन व्यापक अधिकार अधिकारों का दावा करता है : ये तीन व्यापक अधिकार हैं:

1) *प्रादेशिक क्षेत्राधिकार संबंधी अधिकार:* यह अधिकार राज्य को परिभाषित क्षेत्र में कानून बनाने और लागू करने या अंतरराष्ट्रीय सीमाएं बनाने का अधिकार देता है। इस क्षेत्र के भीतर प्रत्येक नागरिक को भूमि के कानून का पालन करना होता है।

2) *इसके क्षेत्र में संसाधनों पर अधिकार:* राज्य खनिजों, तेल और प्राकृतिक संसाधनों (जैसे तेल, लोहा, कोयला, बॉक्साइट, आदि) का उपयोग करने और नियंत्रित करने के लिए और इसकी बिक्री घरेलू बाजार में या निर्यात के साथ राजस्व उत्पन्न करने के लिए नीतियों का विकास करता है।

3) *सीमाओं पर नियंत्रण संबंधी अधिकार:* राज्य अपने क्षेत्र के भीतर लोगों, संसाधनों, वस्तुओं और सेवाओं की आवाजाही को नियंत्रित करता है (स्टिलज़, 2011)।

इसलिए, राज्य, कर्मियों का एक सामूहिक समूह है जो कानून के शासन के आधार पर नीति निर्धारण के अधिकार रखने वाले प्राधिकारों पर कब्जा कर लेता है। समकालीन लोकतांत्रिक दुनिया में राज्य के तीन विशिष्ट निर्णय लेने वाले प्राधिकरण हैं:

1) राज्य, प्रशासनिक और एक संस्थागत वैधानिक प्राधिकरण के रूप में,

2) राज्य, एक शासक वर्ग के रूप में जो सार्वजनिक नीति तय करता है, और

3) समाज में शासन के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक आदर्शपरक आदेश को बढ़ावा देने के लिए एक एजेंसी के रूप में, राज्य।

यद्यपि कुछ क्षेत्रों में और सामाजिक समूहों के लिए राज्य का हस्तक्षेप विफल हो सकता है, तथापि राज्य के पूर्ण नियंत्रण समाप्ति को कभी भी विकल्प नहीं माना जासकता है। ऐसी परिस्थितियां राज्य और समाज के बीच के अंतर को मिटाने के लिए समाधान प्रदान करने हेतु मानवविज्ञानी की भूमिका को जन्म देती हैं।

अपनी प्रगति जांचें

8) क्या राष्ट्र और राज्य में अंतर है?

....

....

....

9) राज्य के मूल अधिकार क्या हैं?

....

....

....

....

....

10) राज्य के विशिष्ट निर्णय लेने वाले प्राधिकरण की व्याख्या कीजिए।

....

....

....

....

....

11) कौन सी स्थिति मानवविज्ञानी की भूमिका को जन्म देती है?

....

....

....

....

....

13.3 मानव विज्ञान का क्षेत्र

दुनिया भर में विकास ने, सफलता को समाज और लोगों की समझ के लिए जिम्मेदार ठहराया है। विकास में प्राप्तकर्ता समुदायों के प्रतिनिधित्व के संकट ने मानवविज्ञानियों के लिए जगह बनाई है। मानवविज्ञान संस्कृति, परंपरा, शक्ति, अर्थव्यवस्था, इतिहास आदि को एकीकृत करने के लिए एक विश्लेषणात्मक ढांचे हेतु शक्तिशाली विश्लेषणात्मक उपकरण प्रदान करता है, (एडेलमैन और हाउगरुड, 2005: 20)। ''स्कोप ऑफ एंथ्रोपोलॉजी'' नामक लेख में लेविस स्ट्रॉस लिखते हैं कि 1858 में अमेरिका में फ्रांज बोआस और फ्रांस में एमिल दुर्खीम दो 'चीफ इंजीनियर' पैदा हुए थे (जिन्होंने राज्य और समाज के बीच की खाई को पाटने की कोशिश की थी), जिन्होंने मानवविज्ञान को डिजाइन किया था। मानवविज्ञान वांछित विकास की कमी के कारण उभरने वाले मुद्दों को दूर करने के लिए लगातार विकसित हुआ है। इसलिए मानवविज्ञानी के लिए विकास एक नैसर्गिक कार्यक्षेत्र है। वेरियर एल्विन के काम से प्रेरित होकर तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित नेहरू ने जनजातीय क्षेत्रों में विकास को संबोधित करने के लिए राज्य की नीति के दिशानिर्देशों को अपनाया, जो आज भी मान्य हैं। आदिवासी विकास के पाँच सिद्धांत हैं:

1) लोगों को अपनी प्रतिभा के आधार पर विकसित करने की अनुमति दी जानी चाहिए और उन पर कुछ भी थोपा नहीं जाना चाहिए।

2) भूमि और जंगल में जनजातीय अधिकारों का सम्मान किया जाना चाहिए।

3) आदिवासी क्षेत्रों में बाहरी लोगों को शामिल करने से बचना चाहिए।

4) जनजातीय क्षेत्रों का कोई अधि–प्रशासन नहीं होना चाहिए और विकास कार्य स्थानीय/पारंपरिक संस्थानों के माध्यम से किया जाना चाहिए, तथा

5) परिणाम को खर्च किए गए धन की मात्रा से नहीं आंका जाना चाहिए लेकिन मानव चरित्र की गुणवत्ता विकसित होनी चाहिए ।

मानव विज्ञान का दायरा बहस का विषय तब से बना हुआ है, जब से ब्रॉनिस्लाव मालिनोस्की ने अफ्रीकी औपनिवेशिक प्रशासकों और इवांस प्रिचर्ड के नीति सलाहकार के रूप में मानवविज्ञानी की भूमिका मे वकालत करते हुए नीति की ढुलमुल दुनिया व अनुप्रयुक्त मानववैज्ञानिकों के जुड़ाव के ठीक विपरीत और भिन्न बनने को कहा था (लुईस 2005)। हालांकि विकास और वैश्विक संरचनात्मक नीति में मानवविज्ञानी, मानवशास्त्रीय विकास विशेषज्ञों के रूप में स्पष्ट रूप से परिभाषित हैं– जो कि कई स्नातक छात्रों के लिए कैरियर की आकांक्षा और व्यावसायिक गतिविधि के एक क्षेत्र के रूप में पहचाना जाता है (बार्थेल और बायर्सचेन, 2013) ।

अपनी प्रगति जांचें

12) विकास में मानवविज्ञानियों की भूमिका किससे उत्पन्न होती है?

....

....

....

....

....

13) मानवविज्ञान विकास को क्या प्रदान करता है?

....

....

....

....

....

14) आदिवासी विकास के पाँच सिद्धांतों की व्याख्या कीजिए?

....

....

....

....

....

....

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

13.4 मानवविज्ञानी और गैर सरकारी संगठन

"पुटिंग सिविल सोसाइटी इन ए प्लेस" लेख में नीरा चंडकोक (2009) एक सवाल पूछती हैं, 'आम लोगों के जीवन में परिवर्तन को प्रभावित करने के लिए एक एजेंट के रूप में नागरिक समाज (एनजीओ) के हस्तक्षेप की क्या सीमाएं हैं? एनजीओ की तीन महत्वपूर्ण सीमाएँ हैं जो राज्य और नागरिक समाज के बीच सहयोग के लिए जगह बनाती हैं:

1) गैर–सरकारी संगठनों के पास वे संसाधन नहीं होते हैं जो गरीबी और अभाव को कम करने के लिए आवश्यक होते हैं। यह राज्य है, जो करजाल को विस्तृत करके और कल्याण और विकास योजनाओं में निवेश के माध्यम से ऐसा कर सकता है।

2) समाज के बदतर वर्गों तक बेहतर संसाधनों के हस्तांतरण की आवश्यकता होती है किन्तु गैर–सरकारी संगठन पुनर्वितरण न्याय की योजनाओं को लागू नहीं कर सकते हैं, और

3) गैर सरकारी संगठन, उन संगठनों व संस्थानों को स्थापित और मजबूत नहीं कर सकते जो सार्वजनिक नीतियों को लागू करते हों।

गैर–सरकारी संगठन (एनजीओ) जिन्हें गैर–लाभ संगठन के रूप में भी जाना जाता है, आज मानवशास्त्रीय ज्ञान के सबसे बड़े उपभोक्ताओं में से एक हैं। गैर–सरकारी संगठनों को पूरे विश्व में समाज में महत्वपूर्ण विकासकारकों के रूप में मान्यता प्राप्त है। गैर–सरकारी संगठनों का दायरा कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) के तहत विकास परियोजनाओं में लाभकारी संगठनों की मध्यस्थता के लिए एक परोपकारी ट्रस्ट के रूप में परोपकार का समर्थन करने से बढ़ा है। कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व को पर्यावरण और समाज पर कंपनी के नकारात्मक प्रभावों को कम करके समुदाय की भलाई के लिए कॉर्पोरेट स्वैच्छिक जिम्मेदारी (सीएसआर) के रूप में जाना जाता है। सीएसआर को आम तौर पर उस तरीके के रूप में समझा जाता है जिसके माध्यम से एक कंपनी आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक अनिवार्यता ("ट्रिपल बॉटम–लाइन–एप्रोच") को प्राप्त करते हुए एक ही समय में शेयरधारकों और हितधारकों की अपेक्षाओं को भी पूरा करती है।

भारत सरकार के कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय ने हाल ही में कंपनी (कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व नीति) नियम, 2014 के साथ कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 135 को अधिसूचित किया है, जिससे कंपनियों के लिए विकास परियोजनाओं में निवेश करना अनिवार्य हो गया है।

राज्य ने इस नीति को कंपनी–समुदाय साझेदारी की उभरती आवश्यकता को पूरा करने के लिए और अधिक विकसित किया है। यह मानवविज्ञानी को एनजीओ या नागरिक समाज संगठनों के साथ काम करने का अपार अवसर प्रदान करता है। विकास नीति में इस बदलाव के साथ वैश्विक नीतियों को शामिल करने के लिए, 'ओल्ड' विकास के मानवविज्ञान का भी विस्तार होना चाहिए, जैसे कि जलवायु परिवर्तन और वैश्विक सामाजिक (सोशल) इंजीनियरिंग (बीएर्श्चेंक, 2014) का मानवशास्त्र। सिविल सोसायटी की भविष्य की भूमिका के अनुसार विश्व आर्थिक मंच

(WEF) द्वारा KPMG इंटरनेशनल के सहयोग से किए गए एक अध्ययन के अनुसार 2030 तक नागरिक समाज की उभरती भूमिकाओं में निम्न कार्य शामिल हो सकते हैं:

1) वॉचडॉग: पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देने के लिए संस्थानों को नियंत्रित रखना।

2) अधिवक्ता: सामाजिक मुद्दों और चुनौतियों के बारे में जागरूकता बढ़ाना और परिवर्तन की वकालत करना।

3) सेवा प्रदाता: शिक्षा, स्वास्थ्य, भोजन और सुरक्षा जैसी सामाजिक जरूरतों को पूरा करने के लिए सेवाएं प्रदान करना, आपदा प्रबंधन, तैयारियों और आपातकालीन प्रतिक्रिया को लागू करना।

4) विशेषज्ञ: नीति और रणनीति को आकार देने के लिए अद्वितीय ज्ञान और अनुभव लाना और समाधानों की पहचान करना और निर्माण करना।

5) क्षमता निर्माता : शिक्षा, प्रशिक्षण और अन्य क्षमताओ का निर्माण करना।

6) इनक्यूबेटर: ऐसे समाधान विकसित करना जिनकी लंबे समय तक स्वीकार्यता या पेबैक अवधि की आवश्यकता हो ।

7) प्रतिनिधि: हाशिये पर रहने वालों या अल्पप्रतिनिधित्व की आवाज को शक्ति देना।

8) नागरिकता चैंपियन: नागरिक जुड़ाव को प्रोत्साहित करना और नागरिकों के अधिकारों का समर्थन करना।

9) एकजुटता समर्थक: मौलिक और सार्वभौमिक मूल्यों को बढ़ावा देना।

10) मानकों का निर्धारण: बाजार और राज्य गतिविधि को आकार देने वाले मानदंड बनाना (WEF 2013 पेज .8)

मानवविज्ञानी अपने कौशल के साथ उपरोक्त 10 भूमिकाओं में सेवाएं प्रदान कर सकते हैं। अंततः महत्वपूर्ण सवाल यह नहीं है कि मानव विज्ञान "प्रासंगिक" है या नहीं। मानव विज्ञान का आश्चर्य यह है कि यह लगातार अभ्यास में खुद को बनाता और बताता है। मानव विज्ञान शायद एकमात्र ऐसी विधा/अनुशासन है जो असंख्य इतिहास धाराओं और एक साझा विश्व की सहमति के बीच वास्तव में महत्वपूर्ण बातचीत के लिए प्रतिबद्ध है (मज़्ज़ेरल्ला, 2002)।

अपनी प्रगति जांचें

15) गैर सरकारी संगठन की सीमाएँ क्या हैं?

....

....

....

....

16) मानवविज्ञानी नागरिक समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति कैसे कर सकते हैं?

....

....

....

17) ऐसे कौन से उभरते क्षेत्र हैं जो मानवशास्त्रीय ज्ञान में प्रासंगिक हैं?

....

....

....

....

....

13.5 मानवविज्ञानी की उभरती भूमिकाएँ

जेरेमी मैकक्लेन्सी (2002) द्वारा संपादित भाग *एक्सोटिक नो मोर* एक प्रासंगिक सवाल की पड़ताल करता है – आज मानवविज्ञानी क्या भूमिका निभा सकते हैं? विभिन्न प्रकार के विषयों को आच्छादित करने वाले प्रश्न से जुड़े विद्वानों द्वारा प्रदत्त संभावित उत्तर के साथ चौबीस लेखों को दो संग्रहों के माध्यम से बताया गया कि मानवविज्ञानी वास्तव में विभिन्न आयामों में महत्वपूर्ण भूमिका कैसे निभा सकते हैं? अध्यायों में अर्थव्यवस्था, धर्म, विज्ञान, लिंग और कामुकता, मानव अधिकार, संगीत और कला, पर्यटन, प्रवास और इंटरनेट, में भूमिका शामिल है। संग्रह दर्शाता है कि मानवविज्ञानी एक ऐसी दुनिया के साथ कैसे जूझते हैं जो निरंतर परिवर्तन में है। कुल मिलाकर संग्रह चार व्यापक उभरती भूमिकाओं और मानवशास्त्रीय ज्ञान की प्रासंगिकता को वर्गीकृत करता है:

1) *मानवविज्ञानी कमजोर समूहों के शोषण की उभरती विकृतियों के रूपों के विश्लेषण में लगे हुए हैं।* संग्रह में शामिल कुछ मामले हैं, फिलिप बोरगोइस द्वारा दरार डीलरों,नैन्सी शेपर–ह्यूजेस कृत अंगों में वैश्विक व्यापार और डेविड नेपियर कृत बौद्धिक संपदा ।

2) *प्रमुख अवधारणाओं और घटनाओं का मानवशास्त्रीय नृवंशविज्ञान संबंधी आलोचनाएं।* इनमें शामिल मामलें जेन सेनराइडर कृत बाजारों पर, विचारधारा पर क्रिस हेन, हिंसा पर माइकल गेलिकेन, जातीयता पर रिचर्ड जेनकिंस, कट्टरवाद पर विलियम बेमन, नस्ल पर फेय हैरिसन, लिंग और कामुकता पर अल्मा गॉम्बेलब, बायोमेडिसिन पर मार्गरेट लॉक, शरणार्थियों पर ई वेलेंटाइन डेनिएल, मानव अधिकारों पर एलेन मेसर और बच्चों के अधिकारों पर जुडिथ एननेव।

3) *मानवविज्ञानी के अप्रत्यक्ष हस्तक्षेप की विशेषज्ञता और अनुभव।* इनमें शामिल मामले है पर्यावरणवाद पर मेलिसा लीच और जेम्स फेयरहेड, भूख पर एलेन मेसर और पार्कर शिप्टन, सहायता पर एलेक्स डे वाल, सर्वाइवल इंटरनेशनल पर जोनाथन मैजावर।

4) वैश्वीकरण की सांस्कृतिक राजनीति में रुचि के परिणामस्वरूप, अक्सर नृवंशविज्ञान साइटों पर विचार जो हाल ही में अनुशासन में सबसे आगे चले गए हैं। मानवशास्त्रीय कार्य के मामले में विज्ञान पर सारा फ्रैंकलिन, मीडिया पर फेय गिन्सबर्ग, संगीत पर जॉन चेर्नॉफ, कला पर क्रिस्टोफर स्टेनर और पर्यटन पर जेरेमी मैकक्लेन्सी का काम शामिल है।

एक्सोटिक नो मोर एंथ्रोपोलाजी फॉर द कंटेंपरी वर्ड का दूसरा संस्करण, जैरेमी मैकक्लेन्सी द्वारा संपादित, 2019 में प्रकाशित किया गया था। यह दर्शाता है कि मानव विज्ञान को इक्कीसवीं सदी में क्या पेश करना है? जेरेमी मैकक्लेन्सी द्वारा *टेकिंग पीपल सीरियसली* शीर्षक से परिचय के अलावा, वॉल्यूम में अन्य अध्याय शहरी जीवन, धर्म, लिंग और कामुकता, रेस, जातीयता और राष्ट्रवाद, समाजवाद नैतिकता, विचारधारा और परिणाम अर्थव्यवस्था, आतंकवाद और आतंकवादरोधी वैश्विक प्रवासन, मानव विज्ञान और विकास, पर्यावरण और मानव विज्ञान, विषाक्त जीवन, विज्ञान, का मानव विज्ञान, इंटरनेट, मानव अधिकारों व वनवासी लोगो के मानवाधिकारों के आत्म–निर्धारण के अधिकार का अभ्यास, मीडिया, फोटोग्राफी, संस्कृति संग्रहालय, पर्यटन और संगीत शामिल हैं।

अपनी प्रगति जांचें

18) "*एक्सोटिक नो मोर*" इसका क्या मतलब है ?

....

....

....

....

....

19) मानव विज्ञान राज्य और नागरिक समाज को भविष्य में क्या दे सकता है?

....

....

....

....

....

20) विकास के संदर्भ में मानवशास्त्रीय ज्ञान के उदय की व्याख्या कीजिए।

....

....

....

....

....

13.6 सारांश

इस इकाई में, आपने भविष्य में नागरिक समाज और राज्य द्वारा आवश्यक मानवविज्ञानी कौशल और विशेषज्ञता के उभरते क्षेत्रों की भूमिका, राज्य और नागरिक समाज की अवधारणा के बारे मे सीखा है। यह इकाई विविध क्षेत्रों के साथ शिक्षार्थियों के दृष्टिकोण को व्यापक बनाती है, जहां समकालीन मानवविज्ञानी वर्तमान में काम कर रहे हैं।

यह इकाई शिक्षार्थियों के लिए क्षितिज का विस्तार करती है ताकि वे राज्य और नागरिक समाज के मानवशास्त्रीय ज्ञान के साथ स्वयं को संबद्ध कर सकें। अंत में, नागरिक समाज के संचालन के क्षेत्रों के समग्र ज्ञान के साथ, शिक्षार्थी नागरिक समाज के साथ काम करने के लिए कौशल विकसित कर सकते हैं। 'मानव विज्ञान आधुनिक दुनिया की समस्याओं का सामना करता है, *एंथ्रोपोलॉजी कन्फ्रंट द प्राब्लम्स ऑफ द मार्डन वर्ड* पुस्तक में क्लाउड लेवी–स्ट्रॉस ने लिखा है –'मैंने समस्याओं पर केवल इसलिए चर्चा की है क्योंकि ऐसा लगता है कि वे बहुत अच्छा योगदान दिखाती हैं, जिस तरह का योगदान मानवविज्ञानी अनुसंधान से आशा कर सकते हैं। मानवविज्ञानियों ने यह प्रस्तावित नहीं किया है कि उनके (उनकी) समकालीन एक या अन्य विदेशी आबादी के विचारों और रीति–रिवाजों को अपनाते हैं। हम जो तथ्य इकट्ठा करते हैं वह एक बहुत विशाल मानवीय अनुभव का प्रतिनिधित्व करता है क्योंकि वे हजारों समाजों से आते हैं जो सदियों से एक–दूसरे पर सफल रहे हैं, कभी–कभी सहस्राब्दी तक के जो बसे हुए पृथ्वी के पूरे विस्तार पर वितरित किए जाते हैं। इसलिए, हम मानव प्रकृति के "सार्वभौमिक" (2013, 58) माने जाने वाले रूप को चित्रित करने में योगदान करते हैं।

इस प्रकार, इकाई मानवविज्ञानी के शिक्षार्थियों को राज्य और समाज के बीच की खाई को पाटने के लिए मानव समाज पर समग्र अनुसंधान को करने और समझने में मदद करती है। इस अंतर को पाटना भी एजेंसियों, राज्य और नागरिक समाज का समग्र लक्ष्य है।

13.7 संदर्भ

American Anthropological Association (2019) accessed on 10th September https://www.americananthro.org/AdvanceYourCareer/Content.aspx?ItemNumber=2148

Bierschenk, T. (2013).From the anthropology of development to the anthropology of global social engineering.*Zeitschrift fur Ethnologie.* Special issue: Current debates in anthropology. 139. 73-97

Chambers, S. &Kopstein, J. (2006) *Civil Society and the State.*Ed.John S Drysek, Bonnie Honig and Anne Phillips (2006).The Oxford Handbook of Political Theory. Oxford.

Chandhoke, N. (2009). Putting civil society in its place.*Economic and Political Weekly.*Vol 44(1).12-16.

Edelman, M. and A. Haugerud. (2005). *The Anthropology of Development and Globalization: From Classical Political Economy to Contemporary Neoliberalism*. Oxford: Blackwell.

Giddens, A. (1999). *The Third Wave: The renewal of social democracy.* Polity Press, Cambridge, UK.

Laine, J (2014)Debating Civil Society: Contested Conceptualizations and Development Trajectories, *International Journal of Not-for-Profit Law.*vol. 16 (1).pp59-77.

Lewis, D. (2005). Anthropology and development: the uneasy relationship, London: LSE Research Online, available at http://eprints.lse. ac.uk/archive/00000253

Lévi-Strauss,Claude (2013) *Anthropology Confronts the Problems of the Modern World*, Translated by Jane Marrie Todd. The Belknap Press of Harvard University Press.

Macclancy, J. (2019). *Exotic No More. Second Edition Anthropology for the contemporary world.* University of Chicago Press.

Mazzarella, W. (2002).On the relevance of Anthropology.*Anthropology Quarterly.*Vol.75 (3).599-607.

McGann, James G. (2019). 2018 TTCSP Global Go To Think Tank Index Report. The University of Pennsylvania. Accessed on 5th September 2019 https://repository.upenn.edu/cgi/viewcontent.cgi?article=1017&context=think_tanks

Ministry of Tribal Affairs (2019) Annual Report 2017-2018, GoI accessed on 10th September, 2019 https://tribal.nic.in/writereaddata/AnnualReport/AR2017-18.pdf

O'Driscoll, E. (2009). Applying the 'Uncomfortable Science': Role of Anthropology in Development, *Durham Anthropology Journal.*Vol 16(1) .13-21.

Strauss, L. (1966). The scope of anthropology.*Current Anthropology.*Vol.7(2).112-123.

Stilz, A. (2011). Nations, States, and Territory.*Ethics*, Vol. 121(3). pp. 572-601

World Economic Forum (2013).*The future role of civil society*, World Scenario Series, In

collaboration with KPMG International. Switzerland. Accessed on 7th September
http://www3.weforum.org/docs/WEF_FutureRoleCivilSociety_Report_2013.pdf

13.8 अपनी प्रगति की जाँच करने के उत्तर

1) अनुभाग 13.0 देखें।

2) अनुभाग 13.0 देखें।

3) हां ।

4) वे हैं : (1) एक समान समाज बनाने के लिए और (2) जीवन चक्र में व्यक्तियों की रक्षा करने के लिए।

5) अनुभाग 13.1 का पहला पैराग्राफ देखें।

6) अनुभाग 13.1 का चौथा, पाँचवा, छठा और सातवा पैराग्राफ देखें।

7) अनुभाग 13.1 का अंतिम पैराग्राफ देखें।

8) हां ।

9) अनुभाग 13.2 का पहला पैराग्राफ देखें।

10) भाग 13.2 का अंतिम पैराग्राफ देखें।

11) भाग 13.2 का अंतिम पैराग्राफ देखें।

12) प्राप्तकर्ता समुदायों के प्रतिनिधित्व का संकट।

13) अनुभाग 13.3 का पहला पैराग्राफ देखें।

14) अनुभाग 13.3 का दूसरा पैराग्राफ देखें।

15) अनुभाग 13.4 का पहला पैराग्राफ देखें।

16) अनुभाग 13.4 का चौथा पैराग्राफ देखें।

17) अनुभाग 13.4 का चौथा पैराग्राफ देखें।

18) मानवविज्ञानी की भूमिका को संदर्भित करता है,, भाग 13.5 देखें।

19) अनुभाग 13.5 देखें।

20) अनुभाग 13.5 देखें।

सुझावित अध्ययन

खंड 1 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान का परिचय

Ferraro G. and Sussan Andreatta. (2014). *Cultural Anthropology: An Applied Perspective* . Stamford: Cengage Learning

Foster, George M. (1969). *Applied Anthropology*. Boston: Little Brown

Nahm S. and Rinker C.H. (eds.). (2016). *Applied Anthropology: Unexpected spaces, topics and methods*. New York: Routledge

Nollan, R.W.N. (2018). "Applied Anthropology". *The International Encyclopedia of Anthropology*. Edited by Hilary Callan. NewYork: JohnWiley & Sons, Ltd.

Podolefsky A., Brown P.J. and Lacy S.M. (eds.). (2003). *Applying Anthropology: An introductory reader*. New York: McGraw-Hill

Tax, Sol. (I964). "The uses of anthropology," in *Horizons of Anthropology*. Sol Tax (ed.), pp. 248-58. Chicago: Aldine

Van Willigen, John. (2002). *Applied Anthropology: An Introduction*. Westport: Bergin & Garvey

खंड 2 अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान के विभिन्न क्षेत्र-I

Belshaw, C. S. (1974). "The Contribution of Anthropology to Development". *Current Anthropology.* 15(4):520-5

Bestor, T. C. (2001). "Markets: Anthropological Aspects" *.International Encyclopedia of the Social & Behavioral Sciences***.** Elsevier Science Ltd. 9227-9231

Crawford, M. H. (2007). *Anthropological Genetics: Theory, Methods and Applications*. Cambridge University Press: Cambridge

Douglas, Mary and Baron Isherwood. (1979). *The World of Goods*. New York: Basic Books

Evans-Pritchard, E. E. (1946). "Applied Anthropology". *Africa.* 16(1):92-98

Escobar. A. (1991). "The Making and Marketing of Development Anthropology". *American Ethnologist*. 18(4): 658-682

Freidson, E. (1976). *Professional dominance: The social structure of medical care*. Atherton Press: New York

Gartaulla, R. P. (2008). *Text Book of Medical Sociology and Medical Anthropology*; Research Centre for Integrated Development, Nepal (RECID/Nepal), Kathmandu, Nepal

Harminder Singh Sodhi & L. S. Sidhu. (1984). *Physique and Selection of Sportsmen: A Kinanthropometric Study*. Punjab: Punjab Publishing House

James A. P. Day. (1986). *Perspectives in Kinanthropometry*. Virginia: Human Kinetics Publishers

Langdon, E. J., & Wiik, F. B. (2010). "Anthropology, health and illness: an introduction to the concept of culture applied to the health sciences". *Revista latino-americana de enfermagem*, Vol. *18*, No. 3, pp. 459-466

Mascie-Taylor, C.G. & Ulijaszek, S.J. (Eds). (1994). *Anthropometry: The Individual and The Population*. Cambridge: Cambridge University Press

Mead, M. (1955). *Cultural Patterns and Technical Change*. New York: Mentor

Sikkink, L. (2009). *Medical Anthropology in Applied Perspective*. Wadsworth, USA: Cengage Learning

Trostle, J. A. (2005). *Epidemiology and Culture*. Cambridge: Cambridge University Press

Yasukouchi A. (2012). Journal of Physiological Anthropology aims to investigate, how the speed of technological advance, experienced during the 21st century, is affecting mankind. *Journal of Physiological Anthropology*. 31-1

खंड 3 अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान के विभिन्न क्षेत्र-II

Askew, K. 2002. "Introduction". In K. Askew and R. Wilk (eds.) *The anthropology of media: A reader*. Oxford, UK: Blackwell. 1–13.

Byers, S. N. (2016). *Introduction to Forensic Anthropology*. USA: Taylor & Francis

Chandhoke, N. (2009). Putting civil society in its place. *Economic and Political Weekly*. Vol 44(1). 12-16

Eiselein, E and M Topper .1976. "Media Anthropology: A Theoretical Framework". *Human Organization*. 35(2):113-121

Hall, S. (1997). *Representation: Cultural representations and signifying practices*. London: Sage

Miller, D and D. Slater. (2000). *The Internet: An ethnographic approach*. Oxford, UK: Berg

Nair and Sharma, (2015). "Media Anthropology: an emerging discipline in India". *Loyola Journal of Social Sciences*, 29(1)1:7-25

Pink, S. (2006). *The Future of Visual Anthropology: Engaging the Senses*. New York: Routledge

Oliver-Smith, Anthony and Hoffman, Sussana M (ed.). (1999). *The Angry Earth: Disaster in Anthropological Perspective*. New York: Routledge

Oliver-Smith, Anthony. (2002). *Catastrophe and Culture: The Anthropology of Disaster*. New York: School of American Research Press

Purkait, R. (2006). Forensic Anthropology in India. *Journal of Indian Academy of Forensic Medicine,* 28(3): 98-99

Tersigni-Tarrant, M. A., & Shirley, N. R. (Eds.). (2012). *Forensic Anthropology: An Introduction*. Florida: CRC Press

Wisner, B., Blaikie, P., Cannon, T., and Davis, I. (2004). *At Risk: Natural Hazards, People's Vulnerability and Disaster*. (2nd edition). London: Routledge

खंड 4 : अभ्यास में व्यावहारिक ज्ञान का उपयोग

Eade, D. (1997). *Capacity Building: An Approach to People-Centered Development*. London: Oxfam

Ervin, Alexander M. (2004). *Applied Anthropology: Tools and Perspectives for Contemporary Practice* (2nd Edition). Boston: Pearson / Allyn & Bacon

Kedia, S., & Bennet, L. A. (2005). "Applied Anthropology". In *Anthropology, from Encyclopedia of Life Support Systems.* Oxford, United Kingdom: EOLSS Publishers

Laine, J (2014) Debating Civil Society: Contested Conceptualizations and Development Trajectories, *International Journal of Not-for-Profit Law.* vol. 16 (1).pp59-77

Linnell, D. (ed.). (2003). *Evaluation of Capacity Building: Lessons from the Field*. New York: Alliance for Non-profit Management

Pandey, G. (2018). *Anthropological Research Methodology: Theory and Practice.* New Delhi: Concept Publishing Company

World Economic Forum (2013).*The future role of civil society*, World Scenario Series, In collaboration with KPMG International. Switzerland http://www3.weforum.org/docs/WEF_FutureRoleCivilSociety_Report_2013.pdf